₹15/-
★ वर्ष 43 ★ अंक 5 ★ मई 2016
हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 43 ● अंक 5 ● मई 2016 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य संपादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries
Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4 सबसे पहले
5 सम्पूर्ण अवतार बाणी
6 अनमोल वचन
16 समाचार
20 वर्ग पहेली
22 पहेलियां
33 कभी न भूलो
44 पढो और हँसो
46 जन्मदिन मुबारक
47 आपके पत्र मिले
48 रंग भरो परिणाम

चित्रकथाएं

12 दादा जी
34 किट्टी

कहानियां

7 जिम्मेदारी किसकी?
: दर्शन सिंह 'आशट'

10 वीर बालक दूधा
: श्यामसुन्दर गर्ग

19 सरपंच की सूझ
: रूपनारायण काबरा

23 गरीब का बेटा किलेंथिस
: रामकुमार आत्रेय

28 गुरु की नसीहत
: फेनम सोगानी

31 वनराज का श्राप
: कमल सोगानी

39 तीन बातें
: राजेन्द्र परदेसी

41 चतुर किसान और घमण्डी जागीरदार
: डॉ. रश्मि शील

विशेष / लेख

18 मक्खियां ...
: किशोर डैनियल

20 डेसीमीटर
: राधेलाल 'नवचक्र'

21 मछलियों का अजूबा संसार
: विभा वर्मा

26 सफरनामा इंजेक्शन का?
: अंकुश जैन

29 विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

38 मौलश्री
: शिवचरण चौहान

कविताएं

9 महापुरुषों के कथन, दिशा ज्ञान
: रामअवध राम

17 घर परिवार
: डॉ. परशुराम शुक्ल

25 अपना इतिहास गढ़ेंगे
: डॉ. दिनेश चमोला

30 बच्चे! मेरी ध्यान से सुन ले...
: मदन शेखपुरी

स्व से सुगन्ध

दो मित्र आपस में बातचीत कर रहे थे। बातचीत का विषय भी अच्छा था कि कैसे अपने आपको ऊँचा उठा सकते हैं। दोनों अपने–अपने तर्कों द्वारा अपने आपको एक–दूसरे से बुद्धिमान साबित करने की कोशिश में लगे हुए थे। बातों में कुछ नरमी और कभी–कभी गरमी का एहसास भी हो रहा था। मैं उनकी बातों को ध्यान से सुन रहा था। यद्यपि दोनों मित्र बातें अच्छी कर रहे थे परन्तु दोनों ही अपनी बात को और अपने तर्क या पक्ष को ही महत्वपूर्ण बता रहे थे और दूसरे के तर्क को न समझने का बहाना कर नया तर्क खोज कर बड़ा बनने की कोशिश कर रहे थे।

सब कुछ सुनने और देखने के बाद अचरज की बात यह थी कि वे जिस स्वयं को ऊँचा उठाने की बात कर रहे थे उसी के कारण वे एक–दूसरे को नीचा दिखाने का अवसर भी नहीं छोड़ रहे थे।

वस्तुतः सोचने का विषय यह है कि ऊपर तो उठना है परन्तु क्या केवल बातें करने से हम ऊपर उठ सकते हैं और अपने व्यक्तित्व में निखार ला सकते हैं!

हम सब जानते हैं कि ऐसा नहीं है। जब हम जानते हैं कि ऐसा नहीं है तो क्यों आज तक हम ऊँचा नहीं उठ पाए। इसका कारण यह है कि बातें करना और समझाना तो हम सभी जानते हैं लेकिन दूसरे की बात को, उसके दृष्टिकोण को या नजरिये को समझना तो दूर; सुनना भी नहीं चाहते।

अगर हम दूसरे के दृष्टिकोण को उसके नजरिये को उसकी परिस्थिति के अनुसार देखेंगे और समझेंगे तो हमें शायद कुछ समझ भी आएगा। इसी तरह दूसरा भी हमारे दृष्टिकोण को हमारे नज़रियें से देखेगा तो वह हमारी बात समझ पाएगा। तभी शुरू होगा एक–दूसरे की समझ को समझने का प्रयास। यही प्रयास दोनों को एक–दूसरे के नजदीक ला सकेगा।

इस कार्य में हम सबको पहल करनी होगी कि मुझे पहले दूसरे की बात को अच्छी तरह से समझकर ही उत्तर देना है। अगर मेरी आंखें ठीक हैं तो मुझे सबकुछ साफ दिखाई देगा और इसी तरह मेरे मन में किसी के प्रति कोई नकारात्मक भाव नहीं है तो किसी की भी बात मुझे बुरी नहीं लग सकती। अगर मैं स्वयं स्वस्थ रहूंगा तभी तो किसी अस्वस्थ को स्वस्थता देने का प्रयास कर सकूंगा। अगर मेरे विचार और मनोस्थिति शुभ एवं सकारात्मक होगी तभी मैं हर किसी का शुभ कर सकूंगा। इसलिए मुझे स्वयं को, अपने आपको हर दिन और ऊपर उठाने का प्रयास करना होगा और यह प्रयास स्वतः ही सुगन्ध की तरह दूसरों को आकर्षित करेगा। जो इस तरह की सुगन्ध को ग्रहण करेगा वह भी अवश्य उस तरह का होने का प्रयास करेगा जैसा कि हमने स्वयं को सुगन्धित किया। फिर स्वयं को ऊँचा उठाने के लिए किसी को नीचा दिखाना या नीचे गिराना नहीं पड़ेगा

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 132

**जिस नूं पूरा सत्गुरु मिलया निबड़ गया ए उसदा लेखा।
चरण धूड़ मस्तक ते लायां बदल जाये मत्थे दी रेखा।
जिस ने अपणा प्रभु पछाता उस दा होया बेड़ा पार।
इस जग अंदर ओही सुखिया बाकी दुखिया कुल संसार।
तत्ती वा ना उस नूं लग्गे जिस ते गुर पूरा किरपाल।
लोक सुखी परलोक सुहेला एथे ओथे रहन्दा नाल।
भगतां दा मुख उजला हुन्दा जग विच हुन्दी जै जै कार।
निंदकां दा मुंह काला हुन्दा पैन्दी जम्मां दी फटकार।
गुरमुक्खां दा मारग वखरा मनमुक्खां दा रस्ता होर।
कहे अवतार सुणो रे सन्तो दोहां दी नहीं मिलदी टोर।**

भावार्थ :

उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि जिसको पूरा सद्गुरु मिल जाता है उसका आवागमन का लेखा–जोखा खत्म हो जाता है। पूरा सद्गुरु पूर्ण ब्रह्म (परमात्मा) का साक्षात्कार कराकर शरणागत भक्त के जन्म–मरण के लेखे को समाप्त कर देता है। सद्गुरु के चरणों की धूल मस्तक पर लगाने से माथे की रेखा बदल जाती है। भाव, सद्गुरु की बात को सिर–मत्थे स्वीकार करने वाले व्यक्ति का भाग्य संवर जाता है। सद्गुरु की कृपा से जिसने अपने अंग–संग रहने वाले इस निराकार–प्रभु को पहचान लिया उसका बेड़ा पार हो जाता है। वह भवसागर में डूबता नहीं है। वास्तविकता में इस संसार में वही सुखी है। बाकी सारा संसार दुखों में डूबा हुआ है।

बाबा अवतार सिंह जी समझा रहे हैं कि जिसके ऊपर पूर्ण सद्गुरु कृपा करता है उसे संसार की भीषण आग जला नहीं पाती और यहाँ–वहाँ अर्थात् लोक और परलोक दोनों जगह वह सुख पाता है, दोनों जगह परमात्मा उसके साथ रहता है। प्रभु–परमात्मा के सदैव संग रहने के कारण उसका लोक सुखी और परलोक सुहेला हो जाता है। सद्गुरु की कृपा से प्रभु को अंग–संग जानने वाले इसके अहसास से युक्त रहने वालों भक्तों का संसार में मुख उजला होता है। संसार में उनकी जय–जयकार होती है, हर जगह उनकी यश–कीर्ति होती है। दूसरी ओर जो सद्गुरु की, सन्तों–भक्तों की निन्दा में लगे रहते हैं उनका मुख काला होता है अर्थात् उन्हें शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है। उन्हें यमराज की फटकार झेलनी पड़ती है और वो जन्म–मरण के चक्कर में दुख भोगते रहते हैं।

बाबा अवतार सिंह जी समझा रहे हैं कि गुरु के वचनों को मानने वाले गुरमुखों–भक्तों का मार्ग और होता है और अपने मन के कहने पर चलने वाले मनमुखों का रास्ता और होता है, दोनों की चाल कभी मिलती नहीं है। इसलिए इन्सान! तू पूर्ण सद्गुरु की शरण में आकर अपना लोक और परलोक दोनों संवार ले।

संग्रहकर्ता : भारतभूषण शुक्ल, बलवीर वर्मा

अनमोल वचन

★ सहनशीलता कमजोरी नहीं बल्कि शक्ति का सूचक है।
★ भक्त एक खिले फूल की भांति होता है और भक्ति उसकी महक है।
★ इन्सानों से समाज बनता है। इन्सान सुधरेगा तो समाज सुधरेगा।
★ भक्तजन समर्पित करके भी भरपूर रहते हैं और संसार छीन कर भी खाली रहता है।
★ अंधकार और प्रकाश की भांति अभिमान और ज्ञान भी इकट्ठे नहीं हो पाते।
★ सूरज की रोशनी का लाभ वही लेता है जिसकी आँखें हैं।
★ अज्ञानी सदा सोये रहते हैं और ज्ञानी सदा जागते रहते हैं।
★ चाहे तुम्हारा कोई भी साथ न दे तो अकेले ही सत्य के मार्ग पर बढ़ते चलो।
★ एक सच्चा भक्त सत्य को अपनाकर इन्सानियत की बुलन्दियों तक पहुँच जाता है।
★ आत्मोन्नति के लिए अधिक से अधिक समय लगायें तो दूसरों की आलोचना करने का समय ही नहीं मिलेगा।
★ जो व्यक्ति सन्तुष्ट है, चाहे उसके पास चाहे थोड़ा सा ही धन हो, फिर भी स्वयं को धनाढ्य समझता है।
★ जीवन के माधुर्य का रस लेने के लिए हमें बीती बातों को भुला देने की शक्ति अवश्य धारण करनी है।
★ जो प्रसन्न रहते हैं, उनके मन में कभी आलस्य नहीं आता। आलस्य एक बहुत बड़ा विकार है।
★ मनोविकारों पर विजय प्राप्त करना ही आत्मा की सच्ची स्वतन्त्रता है।
★ दूसरों को खुशी देना सर्वोत्तम दान है।
★ जो हर्षित मुख है, वह स्वयं भी प्रसन्न रहता है और दूसरों के अधरों पर भी मुस्कान ले आता है।
★ होठों पर मुस्कान हर मुश्किल कार्य को आसान कर देती है।
★ व्यर्थ कर्म भारीपन व थकान लाते हैं जबकि श्रेष्ठ कर्म हमें प्रसन्न व हल्का बनाकर ताजगी प्रदान करते हैं।
★ यदि तुम अच्छे रास्ते पर हो तो संसार की बड़ी से बड़ी शक्ति तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकती।
★ ईमानदार व्यक्ति हमेशा प्रसन्न एवं सुखी रहता है तथा ईमानदारी की सदैव विजय होती है।
★ जो व्यक्ति सन्तुष्ट है, वह भौतिक सुखों की कामना नहीं करता।

— निरंकारी बाबा जी

कहानी : दर्शन सिंह 'आशट' (डॉ.)

जिम्मेदारी किसकी?

बबलू बेहद लाड़ला था। अब वह पांच वर्ष का हो गया था। स्कूल से उसे डर लगता था। एक दिन उसकी मम्मी उसे एक अच्छे स्कूल में दाखिल करवाने गई तो उसने रो–रोकर आसमान सर पल उठा लिया। दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ। फिर तीसरे और चौथे दिन मम्मी उसे कभी चॉकलेट, कभी टाफियां देकर मनाती। लेकिन बबलू स्कूल जाने से पहले ही चॉकलेट और टाफियां चट कर जाता। स्कूल में प्रवेश करते ही उसे पता चल जाता कि मम्मी अब उसे छोड़कर घर चली जायेगी। कक्षा के बच्चों में सबसे ज्यादा चिल्लाने वाला बबलू ही था।

बबलू थोड़ा और बड़ा हुआ तो उसने रोकर स्कूल जाना बंद कर दिया। वह रिक्शा में स्कूल जाने लगा। पड़ोस से ही रिक्शा में उसके दो और दोस्त भी साथ जाते थे।

बबलू का ज्यादा ध्यान शरारतों की ओर ही लगा रहता। उसकी किताबें और कापियों के पृष्ठ प्रायः फटे ही रहते।

एक दिन नितिका मैडम कक्षा में अभी नहीं आई थीं। क्लास–रूम में शोरगुल मचा हुआ था। बबलू अपनी एक कापी के पृष्ठ फाड़–फाड़कर जहाज बनाकर उड़ाता हुआ चिल्ला रहा था। उसके कागजी जहाज कमरे के दरवाजे के बाहर तक पहुँच रहे थे। बबलू ने एक और जहाज बनाकर दरवाजे की ओर जोर से उड़ाया। बिल्कुल उसी समय नितिका मैडम ने कमरे में प्रवेश किया। जहाज की नोक उनके माथे पर लगी। नितिका मैडम एकदम घबरा गईं। शुक्र है कि उनकी आंख बच गई। गुस्से में उनके माथे पर बल पड़ गये।

नितिका मैडम ने पता लगा लिया कि जहाज बबलू का ही था। उन्होंने उसे पकड़कर तत्काल कमरे से बाहर निकाल दिया और बोलीं, ''बाहर खड़े रहो। तुम्हारे लिए यही सजा है।''

बबलू सिसकने लगा। कुछ देर बाद नितिका मैडम ने उसे अन्दर बुला लिया। उससे वादा लिया कि वह कमरे में कभी ऐसी हरकत नहीं करेगा लेकिन बबलू की शरारत ज्यों की त्यों ही रही।

वार्षिक परीक्षा का परिणाम निकल चुका था। बबलू के अच्छे अंक तो नहीं आ सके लेकिन इतना जरूर था कि वह पास हो गया।

एक दिन मम्मी बबलू की कापियों में स्कूल का काम देखने लगी तो चकित रह गई। उसकी कोई भी कापी ऐसी न थी जिसके पृष्ठ फटे हुए न हों।

पता चला कि उसने अपनी कापियों के पृष्ठ जहाज, किश्तियां और गेंदें बनाकर नष्ट किये हैं। स्कूल आंगन की कोई भी दिशा ऐसी नहीं थी जिस तरफ उसका जहाज न उड़ा हो। स्कूल का माली क्यारियों और फूलों की झाड़ियों की शाखाओं में फंसे हुए कागज के टुकड़े निकालता। कई बार कागज के टुकड़े एक स्थान पर जमा हो जाते। परिणामस्वरूप पानी बाहर बहने लगता।

बबलू को दादा जी से बहुत स्नेह था। एक दो दिन बाद वह दादा जी के साथ शाम को पार्क में घूमने जरूर जाता।

दादा जी बहुत सफाई पसंद थे।

एक दिन बबलू के दादा जी उसे पार्क में लेकर गये। उन्होंने देखा कि वहाँ कागज के कुछ टुकड़े बिखरे पड़े थे।

लेकिन यह क्या? सैर करते–करते दादा जी कागज के टुकड़े उठाने लगे।

''दादा जी, ये क्या कर रहे हो? वो देखो सामने। मेरे दोस्त बंटी के पापा आ रहे हैं। क्या सोचेंगे? तुम कोई......?

यह सुनकर दादा जी हँस पड़े। कहने लगे, ''बबलू, मैं समझ गया हूँ कि तुम क्या कहना चाहते हो? यह पार्क हम सबके लिए ही बनाया गया है। हम यहाँ आकर सैर करते हैं। ताजी और खुली हवा लेते हैं। फूलों को देखकर हमारा मन हर्षाता है। जिस किसी ने भी खा–पीकर कागज के लिफाफे यहाँ फेंके हैं, मैं उसे मूर्ख कहूँगा। बेटा, मैं बिखरे कागजों को उठाकर कूड़ेदान में फेंककर छोटा नहीं हो जाऊंगा। यदि हर कोई यही सोच ले कि यह मेरा काम नहीं है तो पार्क में गंदगी बढ़ती ही जायेगी।''

इतने में बंटी के पापा बबलू के दादा जी पास आये। उन्होंने उन्हें कागज के बिखरे टुकड़े उठाते देख लिया था।

''अंकल, लाओ मुझे पकड़ाओ ये कागज के टुकड़े। मैं इन्हें कूड़ेदान में फेंक आता हूँ।'' यह कहकर बंटी के पापा जी ने उनके हाथ से कागज पकड़े और कूड़ेदान में फेंकने के लिए चले गये।

घर लौटते समय बबलू इसी घटना के बारे में सोचता रहा।

अगले दिन बबलू स्कूल गया। उसने देखा, फूलों की क्यारियों में कुछ कागज के टुकड़े बिखरे पड़े थे। ये वही कागज थे जो कल बबलू ने अपने मनोरंजन करने के लिये जहाज वगैरह बनाकर फेंके थे। उसने एक–एक करके उन टुकड़ों को उठाया और कूड़ेदान में फेंक आया।

''शाबाश।'' अचानक ही बबलू के कानों में यह बोल सुनाई दिये। साथ ही किसी ने उसकी पीठ भी थपथपाई।

बबलू ने पीछे मुड़कर देखा, नितिका मैडम थी। उन्होंने बबलू को बगल में ले लिया।

दो बाल कविताएं : रामअवध राम

महापुरुषों के कथन

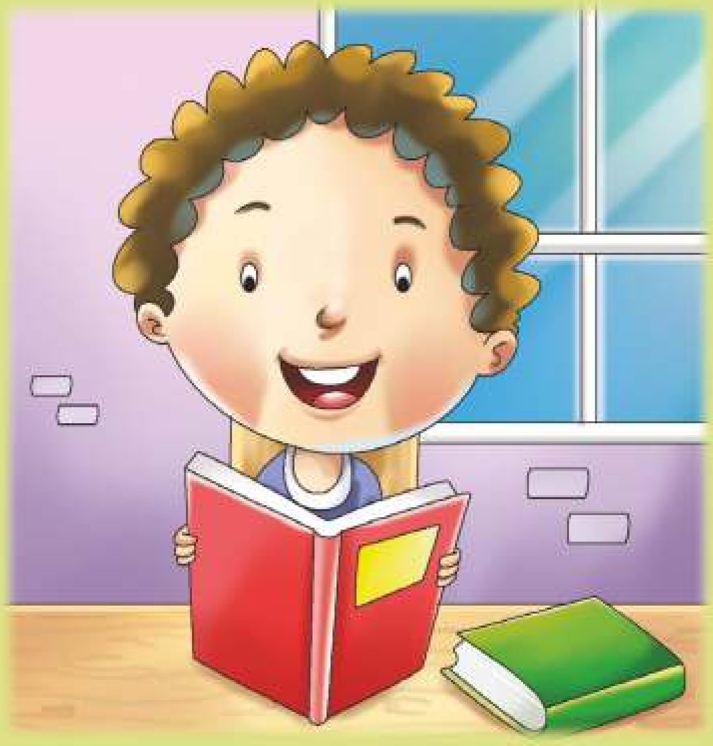

अच्छी बातों पर बच्चों,
रखो विशेष ध्यान।
जीवन में आगे बढ़ने का,
है यह कर्म महान।

व्यर्थ कर्म भारीपन,
और लाते हैं थकान।
श्रेष्ठ कर्म होठों पर,
लाते हैं मुस्कान।

बाल्यकाल में जो करते हैं,
अच्छे नियमों का पालन।
जीवन में सफल वे होते हैं,
ये हैं महापुरुषों के कथन।

दिशा ज्ञान

आओ करें दिशा ज्ञान।
कितनी कौन करें पहचान।

निकले सूरज जब हो भोर।
खड़े हों मुँह करके उस ओर।

सामने दें पूरब का ध्यान।
पीठ की ओर पश्चिम लें जान।

अपने दोनों हाथ फैलाकर।
बांये ख्याल में लाएं उत्तर।

रखें समझ दक्षिण की दाएं।
ऐसे जानें चार दिशाएं।

ऐतिहासिक कहानी : श्यामसुन्दर गर्ग

वीर बालक दूधा

एक चौदह वर्षीय मेवाड़ी भील बालक दूधा लोकगीत गुनगुनाता अरावली पर्वतमाला के जंगलों में अपनी गायों को चराकर घर की ओर चला जा रहा था। अचानक घोड़े की हिनहिनाहट से उसका ध्यान भंग हो गया। हिनहिनाहट आने की दिशा की ओर देखा तो पगडंडी से कुछ दूर एक चट्टान के समीप एक घोड़ा दिखाई दिया तथा पास ही राजसी परिधान में तेजस्वी आकृति को बैठे देखा। दूधा राजसी पुरुष के पास आ गया।

राजसी तेजस्वी चेहरे पर कई दिनों से भूख की मलिनता दूधा को दिखाई दे रही थी। दूधा ने गाँववासियों से सुना था कि महाराणा प्रताप मुगलों से मेवाड़ को आजाद कराने के लिए लड़ रहे हैं, वह जंगलों में भटक रहे हैं। दूधा को इस बात की प्रसन्नता थी कि महाराणा ने बादशाह की अधीनता स्वीकार नहीं की है। उसने महाराणा से पूछा, 'म्हारा महाराणा।' जवाब मौन स्वीकृति से सिर हिलाने से मिल चुका था।

दूधा ने पुनः प्रश्न किया– महाराणा, कांई था भूखा हो?

महाराणा मुस्कुराये तथा मौन स्वीकृति में एक बार फिर सिर हिला दिया।

दूधा अपने महाराणा को अधिक भूखा नहीं देख सकता था। वह तुरन्त ही दौड़ता हांफता हुआ अपने घर आया एवं खुद के लिए रखी रोटियां कपड़े में बांध फिर से उसी गति से कुछ समय में

वहाँ पहुँच गया। उसने रोटियां महाराणा को दी। महाराणा ने भील बालक द्वारा अपनेपन से लाई रोटियां प्रेमपूर्वक खाई। उस दिन के पश्चात् यह नित्य का कर्म हो गया।

दूधा गायों को जंगल में चराने ले जाते वक्त रोटियां लाता और महाराणा को खिला देता। एक दिन दो मुगल सैनिक गश्त कर रहे थे। दूधा को उन्होंने जंगल में जाते देखकर रोक लिया और रोटियों को देख पूछा कि कहाँ ले जा रहा है?

दूधा तुरन्त समझ गया कि ये सैनिक ऐसा क्यों पूछ रहे है? अतः दूधा ने जवाब दिया, म्हारी गायां रा डेरा (गौशाला) पर जा रह्या हूँ। ये म्हारी रोटियां हैं। मुगल सैनिकों ने उसे जाने दिया किन्तु कुछ क्षण बाद ही उन्हें शंका होने पर कि यह झूठ बोल रहा है उसे आवाज दे, पुनः बुलाया तो दूधा को यह भांपने में देर नहीं लगी कि सैनिकों को उस पर शक हो गया है। उसने पगडंडी छोड़ तीव्रगति से पहाड़ी चट्टानों पर चढ़ना शुरू कर दिया। दूधा को चट्टानी रास्ते दौड़ते हुए भागता हुआ देख एक मुगल सैनिक ने अपनी तलवार से निशाना साधा। दूधा की तरफ फेंकी, जिससे दूधा का हाथ कटकर अलग हो गया। जिसमें रोटियां थी। दूधा को तुरन्त ख्याल आया कि रोटियां नहीं पहुँची तो म्हारा महाराणा भूखा रह्वैला। उसने तुरन्त दूसरे हाथ से रोटियां उठाई तथा जंगल की ओर तीव्र गति से चल पड़ा।

मुगल सैनिक हतप्रभ हो देखता रह गया और यह सोचने को विवश हो गया कि यह बालक बलिदानी है, यह धरा धन्य है। हमारा बादशाह इसे कैसे अधीन रख सकता है। महाराणा प्रताप जंगल में विचारमग्न बैठे थे। दूधा को इस हालत में देख सकते में आ गए। उन्होंने रक्त रंजित वीर बालक को छाती से लगा लिया। महाराणा की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। जो इस बात का प्रमाण थी कि 'म्हू भूखों मरू, म्हू प्यासो मरू मेवाड़ धरा आजाद रहे।'

दूधा जैसा वीर बालक हो, वह मेवाड़ भला कैसे पराधीन रह सकता है।

क्या तुम्हें पता है?

- ☆ सूरज की रोशनी से हमें विटामिन 'डी' मिलता है।
- ☆ सहारा रेगिस्तान अफ्रीका में है।
- ☆ दुनिया में सबसे ज्यादा गेहूं चीन में पैदा होता है।
- ☆ थाइलैण्ड को सफेद हाथियों का देश कहा जाता है।
- ☆ सिन्कोवा नामक पेड़ से कुनैन पैदा होती है।
- ☆ विमानों और मोटर नावों की गति मापने वाले यंत्र का नाम टेकोमीटर है।
- ☆ बिजली के बल्ब का फिलामेंट टंगस्टन का बना होता है।
- ☆ परिधानों में तंग कमर का फैशन फ्रांस के सम्राट लुई चौदहवे की पत्नी ने किया था।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

इस बहादुर बच्चे का नाम था वीर। एकदम निडर और बेखौफ। न तो वह अन्य बच्चों की तरह अंधेरे से डरता था और न ही किसी और चीज़ से।
एक दिन की बात है उसकी दादी की तबियत अचानक बहुत खराब हो गई और उसके मम्मी–पापा को गाँव जाना पड़ा।
उसकी वार्षिक परीक्षा नज़दीक थी इसलिए वह उनके साथ नहीं जा सकता था। मजबूरन उसके मम्मी–पापा को उसे घर पर ही छोड़ कर जाना पड़ा।

रात को जब वीर सोने जाने लगा तो उसे लगा जैसे कि छत पर कोई है। वह जानता था कि छत के रास्ते से अंदर घुसना किसी चोर के लिए कोई मुश्किल काम नहीं था।
उसने अपना दिमाग दौड़ाया और खतरे से निपटने के लिए झटपट कुछ तैयारी कर ली।
वह रसोईघर में गया और वहाँ से थैली में मिर्च पाऊडर भर लाया तथा सीढ़ियों के नीचे छिपकर बैठ गया। बस फिर क्या था? जैसे ही चोर सीढ़ियों से उतर कर नीचे पहुँचे, उसने झट से हाथ में पकड़ी हुई लाल मिर्च चोरों की आँखों में डाल दीं। चोर एकाएक कुछ समझ ही नहीं पाए।

वाह! इतना होशियार और तेज़ था वीर!
हाँ! बेटा, चोर तो दर्द से छटपटाने लगे और वीर ने झटपट पुलिस को फ़ोन कर दिया।
और तो और, पुलिस के आने तक उसने चोरों को कमरे में बंद कर दिया ताकि वे भागने की कोशिश न कर पाएं।
वाह! दादा जी, इसका मतलब अगर हम भी अपने मन के डर को जीत कर समझदारी से काम लें तो बहादुरी के कारनामे दिखाकर इनाम जीत सकते हैं।
बिल्कुल, बच्चों।

सूरज ने छीना मंगल से पानी और वायुमंडल

लंदन। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा आखिरकार उस कारण का पता लगाने में सफल रही जिसके कारण मंगल पर जीवन की संभावनाएं खत्म हो गई और यह एक निर्जन ग्रह के रूप में परिणित हो गया।

ब्रिटेन के दैनिक डेली मेल के अनुसार मंगल पर पानी और जीवन की संभावनाओं की खोज में लगे नासा के अनुसंधानकर्ताओं ने खुलासा किया है कि मंगल पर जीवन की संभावनाओं को खत्म करने वाला और कोई नहीं सूर्य ही है। सौर ज्वालाओं के कारण लाल ग्रह पर मौजूद पानी सूख गया और वायुमंडल भी नष्ट हो गया। यह प्रक्रिया आज भी जारी है और सूर्य से निकलने वाली इन गर्म ज्वालाओं के कारण मंगल के बाहरी वायुमंडल में आज भी क्षय हो रहा है। नासा की ओर से जारी बयान में बताया गया है कि अब मंगल के निर्जन होने का रहस्य खुल चुका है। सूरज ने ही इस ग्रह से पानी और वायुमंडल को छीन लिया और आखिरकार यह जीवनविहीन ग्रह के रूप में परिणित हो गया।

नासा के अनुसार इस खोज से लाल ग्रह के इतिहास, उद्विकास और जीवन की संभावनाओं की पूरी पहचान की जा सकती है। नासा ने यह भी बताया कि पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र के कारण यहाँ मंगल जैसे हालात नहीं बन पाए। अगर पृथ्वी का चुम्बकीय क्षेत्र नहीं होता तो यहाँ भी मंगल के जैसे हालात होते। पृथ्वी के चारों ओर मौजूद चुम्बकीय क्षेत्र 'मैग्नेटोस्फेयर' के कारण यह ग्रह सौर ज्वालाओं के कहर से बचा हुआ है। पृथ्वी पर जीवन के लिए इतनी महत्वपूर्ण इस पर्त का लगातार क्षय हो रहा है।

पिछले 200 साल में इस पर्त में 15 फीसद का क्षय हो चुका है। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर इस पर्त को नष्ट होने से बचाने के लिए कुछ नहीं किया गया तो पृथ्वी पर सौर ज्वालाओं का वैसा ही कहर टूटेगा जैसा मंगल पर हुआ था और यहाँ भी पानी के खत्म होते ही पृथ्वी भी मंगल के जैसा निर्जन ग्रह बन जाएगा

वर्ष 2014 से मंगल ग्रह के चक्कर लगा रहे नासा के यान मावेन द्वारा मुहैया कराई गई जानकारी के अनुसार अरबों साल पहले मंगल का वायुमंडल पृथ्वी से भी घना था और वहाँ नदी, झील और समुद्र होने के लिए माहौल पूरी तरह से अनुकूल था। उस समय मंगल के चारों ओर भी रक्षात्मक चुम्बकीय पर्त थी लेकिन किसी कारणवश मंगल की यह रक्षात्मक पर्त नष्ट हो गई और इसी कारण जिस लाल ग्रह पर कभी समुद्र और नदियों की लहरें हिचकोलें लेती थीं उस ग्रह का पानी सौर ज्वालाओं के प्रभाव में पूरी तरह से सूख गया।

आज के समय में मंगल की सूर्य से जितनी दूरी है और उसका वायुमंडल जितना पतला है उसी के कारण यह ग्रह पृथ्वी की तुलना में कहीं अधिक ठंडा है। नासा की खोज के अनुसार लाल ग्रह के वायुमंडल से सौर ज्वालाओं के प्रभाव में अब भी गैसों का क्षय हो रहा है। सौर ज्वालाओं के तीव्र होने पर लाल ग्रह के वायुमंडल में तेजी से क्षय होता है। इन्हीं सौर ज्वालाअें ने मंगल पर मौजूद पानी को सोखकर उसे निर्जन ग्रह में तब्दील कर दिया। (वार्ता)

—संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

विश्व परिवार दिवस (15 मई) पर विशेष

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

घर परिवार

छोटा–सा परिवार हमारा,
साथ–साथ हम रहते।
एक दूसरे से हम सारी,
अपनी बातें कहते।।

पापा जी दफ्तर जाते हैं,
शाम ढले घर आते।
अपने दफ्तर की सब बातें,
आकर हमें बताते।।

मम्मी मेरी शाला जाती,
बच्चे खूब पढ़ाती।
चार बजे वापस आ घर में,
काम सभी निपटाती।।

दीदी मेरी सोशल वर्कर,
सबकी सेवा करती।
उससे बड़े–बड़े डरते,
नहीं किसी से वह डरती।।

मैं छोटा सा बच्चा हूँ पर,
करता रोज पढ़ाई।
एक बार कक्षा में मैंने,
कविता नई बनाई।।

लिख डाली मैंने कविता में,
घर की सत्य कहानी।
पापा तुम घर के राजा हो,
मम्मी घर की रानी।।

दीदी राजकुमारी मेरी,
परियों की शहजादी।
बातें सबसे करती जैसे,
घर की बूढ़ी दादी।।

पापा कभी–कभी दफ्तर से,
महानगर भी जाते।
पाँच सितारों में रहते पर,
बोर बहुत हो जाते।।

मम्मी अपनी मम्मी के घर,
मई–जून में जाती।
लेकिन उसे वहाँ पर हरदम,
घर की याद सताती।।

घर से सबका नाता ऐसा,
भूल नहीं हम पाते।
दूर कभी जाते भी हैं तो,
झट वापस आ जाते।।

आलेख : प्रस्तुति : किशोर डैनियल

मक्खियां गन्दगी फैलाती हैं

बच्चों, क्या आपको ज्ञात है कि साधारण घरेलू मक्खियां अपने वंशज की सहायता से कुछ ही सप्ताहों में कई लाख मक्खियां पैदा हो जाती हैं। सौभाग्य से ये सभी मक्खियां अपने जीवन की वयस्क अवस्था तक नहीं पहुँच पाती हैं।

एक ताजा सर्वेक्षण से पता चला है कि घरेलू मक्खी से तीस तरह की बीमारियां पैदा हो सकती हैं। इन बीमारियों से बचने के लिए खाद्य पदार्थों एवं भोजन को हमेशा ढक कर रखें एवं खाद्य सामग्री साफ एवं स्वच्छ जगह पर बनानी चाहिए।

मक्खियां लगभग पूर्ण रूप से गन्दगी पर निर्भर करती हैं। सड़े–गले पदार्थों और गन्दगी के ढेर पर ये तेजी से पनपती हैं। एक मादा मक्खी में दो हजार अंडे देने की क्षमता होती है। इसमें बहुत–सी मक्खियां दस–बारह दिनों में अपनी वयस्क अवस्था तक पहुँच जाती हैं।

मक्खियां केवल अपनी टांगों से और परों से ही कीटाणु नहीं ले जाती वरन अपने शरीर के अन्दर भी कीटाणु ले जाती हैं। प्रत्येक मक्खी के शरीर में एक छोटी थैली होती है जिसको वह गन्दगी को खाते समय भर लेती है और फिर उड़कर उसी गन्दगी को दूसरी जगह जहाँ बैठती है गंदगी को वहाँ छोड़ देती है। इसीलिए दीवारों पर और छत्तों पर इसी कारण गंदगी के छोटे–छोटे काले धब्बे दिखाई देते हैं। यदि आप मक्खियों को अपने घर में प्रविष्ट होने देने के प्रति असावधान हैं तो हो सकता है यही काले धब्बे आपको अपने घर में भी दिखाई दें।

मक्खियां अपने साथ विभिन्न प्रकार के कीटाणु ले आती हैं। जैसे सन्निपात ज्वर, हैजा, पेचिश आदि के कीटाणु फैलाती हैं। मक्खी पोलियो रोग के कीटाणु विषाणु या आंतों के कीड़ों के अण्डे भी ले आती है। जहाँ भी मक्खियां बैठती हैं। वहीं पर गन्दगी और कीटाणु छोड़ देती हैं। किसी शिशु के ऊपर इनका बैठना विशेष रूप से खतरनाक होता है। ये खाना पकाने के बर्तनों, रसोईघरों, रेस्तराओं, खाद्य पदार्थ की दुकानों तथा भण्डारगृहों को दूषित कर देती हैं।

मक्खियों से पीछा छुड़ाने के लिए अपने घर और आसपास के क्षेत्र में उनके प्रजनन को रोक दिया जाए। अपने घर के अन्दर व आस–पास कूड़ा–करकट और गन्दगी को जमा न होने दें।

प्रेरक–प्रसंग : रूपनारायण काबरा

सरपंच की सूझ

एक गाँव था सल्हदीपुर। इसी गाँव में रहता था एक गरीब किसान। उसके पास ज्यादा जमीन–जायदाद नहीं थी। बस थोड़ी–सी जमीन थी और कुछ गायें थीं। उसके तीन लड़के थे– रामू, प्रेमा और नारायण। तीनों बड़े ही आज्ञाकारी और पिता की इज्जत करने वाले थे। जब किसान के मरने का वक्त आया तब उसने अपने तीनों पुत्रों को अपने पास बुलाया और कहा, ''बेटो, मेरे जाने का वक्त आ गया है। मेरे मरने के बाद तुम बंटवारे के लिये झगड़ना नहीं। देखो, सम्पत्ति के नाम पर केवल 17 गायें हैं। इस सम्पत्ति का बंटवारा तुम मेरी आज्ञा के अनुसार इस प्रकार करना –

देखो, रामू का परिवार बड़ा है। उसके खर्चे बहुत हैं, अतः सम्पत्ति का आधा भाग इसको मिलेगा। प्रेमा की भी शादी हो चुकी है, अतः तिहाई भाग उसको प्राप्त होगा। और बेटे नारायण तेरे खर्चे सबसे कम हैं, अतः तू सम्पत्ति का नौवां भाग ले लेना।'' इतना कहकर किसान स्वर्ग सिधार गया।

तीनों पुत्रों के लिये सम्पत्ति का बंटवारा एक विचित्र समस्या बन गई। वे बेचारे इधर–उधर सब तरफ घूमते फिरे। जगह–जगह सलाह ली पर किसी को हल नजर नहीं आया। आखिर किसी से सुना कि ग्राम मंढ़ा के सरपंच मांगीलाल जी सूझबूझ के धनी हैं। वे उनके पास गये और अपनी समस्या रखी। पहले तो सरपंच भी चकराया, फिर बोला, ''तुम लोग कल आना, मैं कोई उपाय सोचूंगा।''

दूसरे दिन जब वे पहुँचे तो सरपंच मांगीलाल ने उनकी समस्या सुलझा दी। उसने उनकी 17 गायों में एक गाय अपनी मिला दी। अब गायें 18 हो गईं। इसका आधा अर्थात् 9 गायें रामू को दे दी गईं। तिहाई भाग अर्थात् 6 गायें प्रेमा को मिल गईं और नवां भाग अर्थात् 2 गायें नारायण को मिल गईं। इस प्रकार 17 गायों का बंटवारा 9+6+2 हो गया। शेष बची एक गाय सरपंच की अपनी थी ही सो अपने पास रख ली।

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा

वर्ग पहेली

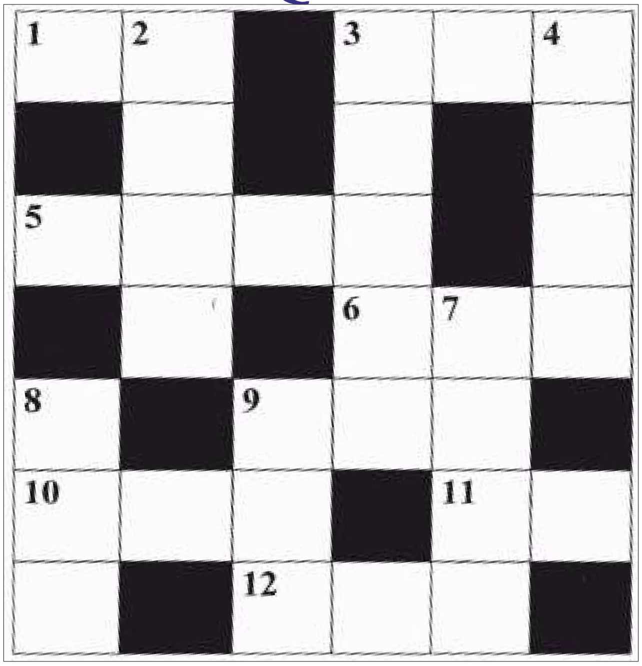

बाएं से दाएं →

1. भारत की सबसे बड़ी मस्जिद .... मस्जिद है।
3. टीपू सुल्तान के पिता का नाम .... अली था।
5. जिस त्यौहार पर रावण का पुतला जलाया जाता है।
6. एक वर्ष में कितने सप्ताह होते हैं?
9. अनादर का विपरीत शब्द।
10. कुश रिश्ते में लक्ष्मण का ...... था।
11. पापा की मम्मी।
12. शुद्ध शब्द छांटिए : दर्शन/दर्सन।

ऊपर से नीचे ↓

2. मारीशस और पुर्तगाल में से जो देश एशिया में है।
3. आंध्र प्रदेश के .... शहर में चारमीनार स्थित है।
4. मैडम क्यूरी को दो भिन्न नोबल पुरस्कार भौतिक और .... के क्षेत्र में मिले थे।
7. बेमेल शब्द छांटिए : जयपुर, लखनऊ, चण्डीगढ़, वरदान।
8. अभिमन्यु की माता का नाम।
9. सुभाष चन्द्र बोस ने .... हिन्द फौज की स्थापना की।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में है)

विज्ञान–वार्ता

डेसीमीटर

प्रस्तुति : राधेलाल 'नवचक्र'

एक कमरे में विज्ञान से संबंधित कुछ उपकरण रखे हुए थे। वे एक–दूसरे के बहुत करीब थे। अतएव उनमें परस्पर विज्ञान–वार्ता शुरू हो गयी।

पहले थर्मामीटर बोला, ''मैं किसी मनुष्य के शरीर का तापक्रम आसानी से बता सकता हूँ।''

''दूध का घनत्व बताने की क्षमता मुझमें है,'' यह लैक्टोमीटर की आवाज थी। वह आगे बोला, ''यही नहीं, उसकी शुद्धता–अशुद्धता की परख भी मुझे है।''

अब बैरोमीटर की बारी आयी। उसने भी झट कहा, ''किसी भी स्थान पर हवा का क्या दबाव है, मुझसे पूछो। तुरंत बता दूंगा।''

तभी तीनों की बातें सुनकर कमरे के एक कोने में पड़ा लकड़ी का बना एक नन्हा–सा पैमाना अपने को रोक नहीं सका। वह भी टपक पड़ा, ''अरे, आप तीनों एक–दूसरे से कितनी दूरी पर हो, यह बताना मेरा काम है।''

''तुम हो कौन?'' तीनों की निगाहें एकाएक उस पैमाने की ओर दौड़ गयी।

अपनी नन्हीं आवाज में वह झट बोला, ''मैं हूँ– डेसीमीटर।''

जानकारी : प्रस्तुति : विभा वर्मा

मछलियों का अजूबा संसार

विश्व की सबसे बड़ी मछली समुद्र में रहने वाली ह्वेल शार्क है। यह अटलांटिक, प्रशांत और हिन्द महासागरों के गर्म क्षेत्र में पाई जाती है। विश्व की समुद्री मछलियों में सबसे छोटी मछली डवार्फ कोवी होती है जो हिन्द महासागर के चागोस द्वीप समूह में पाई जाती है।

सबसे विषैली मछली पाषाण मछली होती है। इस मछली के कांटों से एक विशेष प्रकार का विष निकलता है जिसे सिनेंसेजा हारिडा कहते हैं। इन्हें छू लेने मात्र से ही मृत्यु हो जाती है क्योंकि इनका विष सीधे तंत्रिकाओं में उत्तक पर असर करता है।

एक मछली ऐसी भी होती है जिसे छू लेने पर विद्युत जैसा झटका मारती है। इसलिए इसे विद्युत मछली या इलेक्ट्रिक फिश कहते हैं। इस मछली का जन्तु वैज्ञानिक नाम तारपीड़ो है। इससे 20 से 25 वोल्ट की विद्युत पैदा होती है। जिनके द्वारा यह अपनी सुरक्षा अन्य जीव–जन्तुओं से करती हैं।

होनहार बिरबान के ...

- सन्त ज्ञानेश्वर ने 12 वर्ष की आयु में भगवद्गीता पर मराठी छंदों में ज्ञानेश्वरी लिखी थी।
- छत्रपति शिवाजी ने 13 वर्ष की आयु में तोरण का किला जीता था।
- भारत कोकिला श्रीमती सरोजनी नायडू ने 13 वर्ष की आयु में 130 पंक्तियों की एक कविता अंग्रेजी में लिखी थी।
- प्रख्यात नाटककार हरिश्चन्द्र चट्टोपध्याय ने अपना प्रसिद्ध नाटक 'अबूहसन' 14 वर्ष की आयु में लिखा था।
- जगतगुरु शंकराचार्य ने 6 वर्ष की आयु में सारे भारत के पंडितों को शास्त्रार्थ में पराजित किया था।
- गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इंग्लैण्ड के महाकवि शेक्सपीयर का 'मैकबेथ' नाटक का बांग्ला अनुवाद 14 वर्ष की आयु में किया था।

प्रस्तुति : नीरज चौधरी (हिरखी पीपरा)

पहेलियां

संग्रहकर्ता : उमाशंकर यादव (दिल्ली),
महन्थ राजपाल (उटुरूकलां)

1. हरा नहीं, नीला मैदान
दिखते नहीं वहाँ तरुवर,
शाम ढले तो वहाँ बिखरते
फूल बड़े सुन्दर–सुन्दर।

2. बदलता है परिधान नहीं
सुनता है पर कान नहीं,
तैरता है पर नाव नहीं
दौड़ता है पर पांव नहीं।

3. पांव कटा तो गाज गिर गई
शीश कटा तो मतलब धन,
इसका हलवा खाने का तो
बार–बार करता है मन।

4. गोल–मटोल कांच की काया
टंगस्टन की आंत,
जहाँ रहूँ मैं हँसे उजाला
तम पर हो आघात।

5. सीधा हो श्रृंगार बनूं मैं
मेरे ऊँचे दाम,
उल्टा होकर चलूं राह पर
बूझो मेरा नाम।

6. आँखें दो हो चाहे चार
मेरे बिना कोट बेकार,
घुसा आँख में मेरे धागा
दर्जी के घर से मैं भागा।

7. घेरदार है लहंगा उसका
एक टांग पर रहे खड़ी,
करते चाह सभी उसकी
वर्षा हो या धूप कड़ी।

8. पंख है लेकिन चिड़िया नहीं
चलता है लेकिन बढ़ता नहीं,
गर्मी भगाना इसका काम
झट बतला दो क्या है नाम।

9. नीचे पटको ऊपर जाऊँ
ऊपर से फिर नीचे आऊँ,
आऊँ–जाऊँ, आऊँ–जाऊँ
चाहे जितना खेल दिखाऊँ।

10. एक लाठी की सुनो कहानी
इसमें छुपा है मीठा पानी।

11. पैरों में जंजीर लगी है
फिर भी दौड़ लगाये,
पगडंडी पर चले झूम के
गाँव–गाँव पहुँचाए।

12. हम दोनों हैं पक्के मित्र
कर सकते हैं काम विचित्र,
पाँच–पाँच हैं नौकर साथ,
नहीं छोड़ते अपना साथ।

(पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

बाल कथा : रामकुमार आत्रेय

गरीब का बेटा किलेंथिस

विकास एक होनहार बच्चा था। वह स्वभाव से ही दयालु था। रात में वह अपने दादा जी के साथ सोता था। दादा जी उसका मन बहलाने के लिए सोते समय कोई न कोई कहानी सुनाया करते। जिस दिन विकास का पढ़ाई का काम जल्दी निपट जाता, उस दिन वह जिद करके भी अपने दादा से कहानी सुनता।

कल भी ऐसा ही हुआ। उसका काम शीघ्र निपट गया था। वह दादा जी के साथ बिस्तर पर लेट गया। फिर उनके गले में हाथ डालते हुए पूछ बैठा– ''दादा जी, क्या गरीब बच्चों का कोई भविष्य नहीं होता? क्या उन्हें जिन्दगीभर ठोकरें खानी पड़ती हैं?

दादा जी ने बड़े प्यार से पोते की पीठ थपथपाई। फिर बोले, ''बेटा, आज ऐसा प्रश्न तुम्हारे दिमाग में अचानक क्यों आया?''

''दादा जी, राजू एक गरीब लड़का है। जब मैं स्कूल बस से छुट्टी के समय घर लौटता हूँ तो वह मुझे लालबत्ती चौराहे पर उतारती है। ठीक तभी राजू भी कंधे पर बस्ता टांगे सरकारी स्कूल से लौट रहा होता है। वह झुग्गी–झोंपड़ी वाली बस्ती में रहता है। आप तो जानते ही हैं वह बस्ती हमारी कॉलोनी के आखिरी सिरे पर है। यह रास्ता हमारे घर के सामने से ही निकलता है। वह मेरे साथ बातें करता हुआ यहाँ तक चला आता है। उसके माँ–बाप गरीब हैं। उसे स्कूल में पढ़ने से हटा रहे हैं। आज वह रो रहा था। उसका भविष्य तो खराब होकर ही रहेगा। ठीक कह रहा हूँ न मैं, दादा जी?'' पूरी बात सुनाते हुए विकास का स्वर भीग उठा था।

''बेटा, बिना पढ़े तो किसी भी बच्चे का भविष्य खराब हो सकता है। मैं राजू के साथ जाकर उसके माता–पिता को समझाने की कोशिश करूंगा। सरकारी स्कूल में बच्चा पढ़ाने से तो उन्हें भी फायदा होता है। थोड़ी–बहुत सहायता हम भी करेंगे। यदि राजू कोशिश करे तो वह खुद भी अपना भविष्य खराब होने से बचा सकता है।'' दादा जी ने विकास को दिलासा देते हुए समझाया।

''वह कैसे, दादा जी? क्या गरीब बच्चा भी बड़ा आदमी, मेरा मतलब डी.सी. या एस. पी. जैसे पद तक पहुँच सकता है?'' विकास ने दादा जी की बात से खुश होते हुए जिज्ञासा प्रकट की थी।

दादा जी विकास की बात से बहुत खुश हुए और बोले– ''बेटा, गरीब बच्चे में यदि पढ़ने की

आकांक्षा जाग जाए और इसके लिए वह सच्चे मन से परिश्रम में जुट जाए तो डी.सी. या एस.पी. ही नहीं, देश का राष्ट्रपति भी बन सकता है। सुनो मैं तुम्हें एक कहानी सुना रहा हूँ।'' इस पर विकास बहुत खुश हो उठा।

दादा जी ने कहानी सुनानी शुरू की– बेटा, यह कहानी यूनान देश की है। एथेंस शहर में एक बालक रहता था। उसका नाम किलेंथिस था। किलेंथिस बहुत ही गरीब था। इतना गरीब कि उसके पास पहनने के लिए अच्छे कपड़े तक नहीं थे। वह हमेशा ही फटे–पुराने कपड़े पहने रहता। ऐसा करना उसकी मजबूरी थी। उसके माता–पिता इतना नहीं कमा पाते थे कि उसके लिए ढंग के कपड़े खरीद सकें।

किलेंथिस ने दार्शनिक जीनो द्वारा चलाई जा रही पाठशाला में पढ़ाई करने के लिए प्रवेश लिया। जीनो की पाठशाला बहुत मशहूर थी। वहाँ पढ़ने वाले छात्रों को प्रतिमास शुल्क चुकाना होता था। किलेंथिस गरीब होने के बावजूद प्रतिमास समय पर शुल्क चुका देता था। हालांकि वह पाठशाला में भी फटे–पुराने कपड़े ही पहने रहता।

वह बहुत होनहार था। समय पर पाठशाला आता। खूब मन लगाकर अध्ययन करता। अपनी कक्षा में हर बार प्रथम स्थान प्राप्त करता। धनी बच्चों को उससे ईर्ष्या होने लगी। वे उसे नीचा दिखाने की ताक में रहते। उनकी इच्छा थी कि किलेंथिस पाठशाला छोड़कर चला जाए परन्तु उनकी इच्छा पूरी नहीं हुई। किलेंथिस दूसरी बातों की ओर ध्यान न देकर अपनी पढ़ाई में जुटा रहता।

दूसरे छात्रों ने एक षड़यंत्र रचा। उन्होंने कहना शुरू कर दिया कि किलेंथिस चोर है। वह यहाँ–वहाँ से पैसे चुराकर लाता है और पाठशाला का शुल्क चुका देता है। धीरे–धीरे ऐसा माहौल बना कि पाठशाला में सभी लोगों को लगने लगा कि किलेंथिस अवश्य ही चोर है। उसकी शिकायत शहर के हाकिम से की गई। हाकिम के द्वारा दण्ड सुनाये जाने से पहले किलेंथिस ने प्रार्थना की कि उसे अदालत में दो गवाहों को प्रस्तुत करने की अनुमति दी जाए। हाकिम ने अनुमति प्रदान कर दी।

पहला गवाह था एक बाग का माली। माली ने हाकिम को बताया कि पाठशाला की छुट्टी होने के बाद किलेंथिस उसके यहाँ आता है। वह कुएं से पानी निकालकर उसके बाग के पौधों की सिंचाई करता है। बदले में वह उसे कुछ पैसे दे देता है।

दूसरा गवाह थी एक बुढ़िया। बुढ़िया ने बताया कि वह बिल्कुल अकेली है और खुद का सारा काम करने में असमर्थ है। दिन निकलने के साथ ही किलेंथिस उसके घर आता है और उसके लिए चक्की चलाकर आटा पीस देता है। बदले में वह उसे कुछ पैसे दे देती है। हाकिम ने किलेंथिस को आरोपमुक्त तो किया ही, साथ ही प्रशंसा करते हुए उसे शाबाशी भी दी।

यह वही किलेंथिस था जिसने बड़ा होने पर बिखरे हुए यूनान को एक बनाया और उसका पहला शासक बना।

कहानी समाप्त होते ही विकास ने अपने दादा से पूछा– ''दादा जी, यह कहानी मनघड़न्त है या असली? इस बात पर पूरी तरह से विश्वास नहीं हो रहा।''

''बेटा, तुम तो पढ़े–लिखे हो। पुस्तकालय से यूनान के इतिहास की पुस्तक ले लो, यह सारी जानकारी तुम्हें वहाँ मिल जायेगी। तुम्हारे पापा का फोन भी इन्टरनेट से जुड़ा है। वहाँ से भी तुम किलेंथिस के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हो। समझे? यह कहानी बिल्कुल असली है।'' दादा जी ने विकास की पीठ पर हाथ रखते हुए उत्तर दिया।

विकास ने मन ही मन निश्चय कर लिया था कि वह भी किलेंथिस की तरह परिश्रमी व ईमानदार बनेगा।

बाल कविता : डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'

अपना इतिहास गढ़ेंगे

अपने हाथों से हम अपना इतिहास गढ़ेंगे।
उन्नति पथ के वीर, झूठ से नित्य लड़ेंगे।।

अब नहीं जरूरत, थाम
किसी की अंगुली, चलने का,
मन्सूबे भी नहीं कि हिम
भय हो जिनके गलने का,
कर स्वयं भाग्य निर्माण
उन्नति के पथ सदा चढ़ेंगे।

हम भारत के भाल, देश की शान बनेंगे।
ले हाथों कृपाण, कर्म की आन बनेंगे।।

बालक में वह जान कि
अब वह बदल सकेगा,
जीवन के अरमान, स्वयं
बन गौरव, महक उठेगा,
बाधा रहें हजार कि
हम प्रेरणा पुंज बनेंगे।

समय धकेले लाख कि, हम बन ढाल रहेंगे।
कर नवयुग का निर्माण, कि गाथा स्वयं कहेंगे।।

वैज्ञानिक जानकारी : अंकुश जैन

सफरनामा इंजेक्शन का

विलियम होर्व नाम के एक सर्जन ने पहली बार 1628 में लिखा था कि शरीर में रक्त के चलने का एक निश्चित सिद्धांत है। हृदय और धमनियों के बीच में रक्त एक निश्चित तरीके और गति से चलता रहता है। वहीं से रक्त धमनियों में सुई लगाकर दवा पहुँचाने का विचार आरम्भ हुआ। किंतु सन् 1664 में इस बात को लेकर एक गंभीर विवाद उठ खड़ा हुआ कि इंजेक्शन की सुई लगाकर रक्त की धमनियों में दवा पहुँचाने का आविष्कारक कौन है? डॉक्टर जॉन डैनियल मेजर स्वयं को एवम् डॉक्टर एलशोल्ज स्वयं को आविष्कारक मानते थे। पर इतिहास ने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉक्टर रैन को आविष्कारक माना। उनके पश्चात् इस कार्य को डॉ क्लार्क, डॉ मेजर, डॉ चार्ल्स, फ्रेकेसेट्स, डॉ एलशोल्ज एवं डॉ होफमेन ने क्रमशः आगे बढ़ाया।

एक दिन डॉक्टर रैन ने राबर्ट बायल नामक एक सज्जन से कहा कि वे किसी भी द्रव्य पदार्थ को रक्त के प्रवाह में डाल सकते हैं। ये बात सन् 1656 की है। बायल ने तुरंत एक बड़े

कुत्ते की व्यवस्था कर डाली। उस कुत्ते के अंदर इंजेक्शन द्वारा धतूरा डालने का प्रदर्शन चिकित्सकों एवं बद्धिजीवी वर्ग के समक्ष किया गया। सारी प्रक्रिया बड़ी सफल रही। धूतरे ने कुत्ते के ऊपर अपना असर दिखाया।

मानव शरीर में दवा डालने का प्रयोग सन् 1657 में हुआ। क्रौक्स मैटलोरम नामक पदार्थ को एक घरेलू नौकर की रक्त धमनी में दिया गया। यह प्रक्रिया बहुत सफल नहीं रही। उधर डॉक्टर टिमथी क्लर्क नामक एक सज्जन ने सन् 1668 में यह घोषणा की कि पिछले दस वर्षों से वे कई प्रकार के द्रव्यों को मानव शरीर के अंदर रक्त धमनियों से डालते आ रहे थे। पर वे अपने शोध से निराश ही रहे। उनकी यह विचारधारा बनी कि इलाज का यह तरीका बेकार है।

सन् 1661 में डॉक्टर एलशोल्ज ने अपने परीक्षण प्रारम्भ किये। उन्होंने जो खास बात देखी। वो यह थी कि कुत्तों की रक्त धमनियों में इंजेक्शन की सुई लगाना इंसानों से अधिक कठिन है। कुत्ते की चमड़ी को काटकर, रक्त धमनी को सामने लाकर फिर सुई उसमें डालना एक समयलेवा काम था। पर इंसानों की रक्त धमनी में सुई द्वारा दवा डालने के लिए चमड़ी को काटना आवश्यक नहीं था।

अभी तक इंजेक्शन की सुई के ऊपर किसी का ज्यादा ध्यान नहीं गया था। आमतौर से सुईयां भौंडी तरह की होती थीं। सन् 1844 के आसपास जब अधत्वचा (चमड़ी की सतह से थोड़ा नीचे) में इंजेक्शन दिया जाने लगा, तब सुईयों पर ध्यान दिया जाने लगा। इस तरह

का सबसे पहला इंजेक्शन मीथ अस्पताल (डबर्लिन) में दिनांक 3 जून 1844 को फ्रांसिस रिन्ड द्वारा दिया गया। सत्तरह वर्ष तक रिन्ड ने किसी को अपना औजार नहीं दिखाया। आखिरकार सन् 1861 में उन्होंने अपने खास तरह के इंजेक्शन के बारे में लेख लिखा।

सन् 1853 में एडिनवर्ग के डॉक्टर ऐलिग्जेंडर बुड ने अपने तरीके से एक इंजेक्शन तैयार किया। इंजेक्शन 90 मि.मी. लंबा एवं 10 मि.मी. चौड़ा होता था। पिस्टर के ऊपरी हिस्से को रूई लपेटा जाता था ताकि वो इंजेक्शन के अनुरूप फिट हो जाए।

आज इंजेक्शन की विधि में बहुत उन्नति हो गयी है। अब सुईयां और प्लास्टिक की बनी डिस्पोजल सिरिंज मिलने लगी हैं, जिनको एक बार ही इस्तेमाल किया जाता है। ●

पहेलियों के उत्तर :

1. आकाश, 2. सर्प, 3. गाजर, 4. बल्ब, 5. हीरा, 6. बटन, 7. छाता, 8. पंखा, 9. फुटबॉल, 10. गन्ना, 11. साइकिल, 12. हाथ।

बोधकथा : फेनम सोगानी

गुरु की नसीहत

एक दिन काशी नगरी के एक गुरु अपने एक शिष्य के संग भ्रमण पर निकले। रास्ते के एक बाग में आम–जामुन के कई पेड़ लगे थे। मीठे–मीठे फलों को देखकर शिष्य के मुँह में पानी भर आया। वह जान–बूझकर धीरे–धीरे चलने लगा। जब गुरु बहुत आगे निकल गये तो उसने पत्थर मारकर कुछ जामुन और आम तोड़ लिये। उन्हें बड़े आराम से खाते–खाते वह धीरे–धीरे चलने लगा।

जब गुरु को अपना शिष्य आता दिखाई न दिया तो वे एक पेड़ के नीचे खड़े होकर उसका इन्तजार करने लगे। तभी कहीं से 9–10 वर्ष का एक नटखट बालक आया और उनकी तरफ तरह–तरह का मुँह बनाकर चिढ़ाने लगा। कभी उन्हें अपनी जीभ दिखाता तो कभी आँखें मटकाता तो कभी अंगूठा दिखाता....।

जब शिष्य अपने गुरु के नजदीक आया तो वह बालक पलभर में ही न जाने कहाँ गायब हो गया।

शिष्य के आते ही उन्होंने कहा, "अभी यहाँ एक बालक खड़ा था, जो तरह–तरह के इशारे कर मुझे चिढ़ा रहा था।"

यह सुनकर शिष्य को बड़ा क्रोध आया और बोला, "आप कहें तो उसे ढूंढकर ले आऊँ और उसकी अच्छी खासी पिटाई कर दूं।"

इस पर गुरु दो मिनट ठहरकर बोले, "शिष्य! इसकी कोई जरूरत नहीं है।"

"क्यों?" शिष्य ने सवाल किया।

गुरु ने कहा, "जानते हो मैंने भी उसकी ओर देखकर बिल्कुल वैसे ही चिढ़ाने वाले इशारे किये थे।"

यह सुनकर शिष्य को हँसी आ गई।

शिष्य के गुस्से को हँसी की लहरों में बदलते देखकर गुरु ने नसीहत प्रदान करते हुए कहा– "जीवन के सफर में छोटी–मोटी क्रोध उत्पन्न करने वाली बातों पर मुस्कुराने की कला में ही इस जीवन का सच्चा आनन्द है।"

वैज्ञानिक जानकारी : डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : सर्दियों में पानी क्यों जम जाता है?

उत्तर : पानी पदार्थ की द्रव अवस्था होती है जिसकी संरचना छोटे–छोटे अणुओं से मिलकर हुई है। ये अणु आपस में एक दूसरे से बंधे रहते हैं। जब पानी को गर्म करते हैं तो अणुओं के मध्य आकर्षण–बल समाप्त हो जाता है और वे स्वतंत्रतापूर्वक घूमने लगते हैं। दूसरी ओर, जब तापमान कम हो जाता है तो अणुओं के मध्य आकर्षण–बल बढ़ जाता है और वे एक दूसरे को परस्पर खींचते हैं। परिणामस्वरूप, पानी तरल न रहकर ठोस (बर्फ) के रूप में बदल जाता है।

प्रश्न : जल–प्रपात की चोटी की तुलना में उसके तल के पास का पानी हल्का–सा गर्म क्यों होता है?

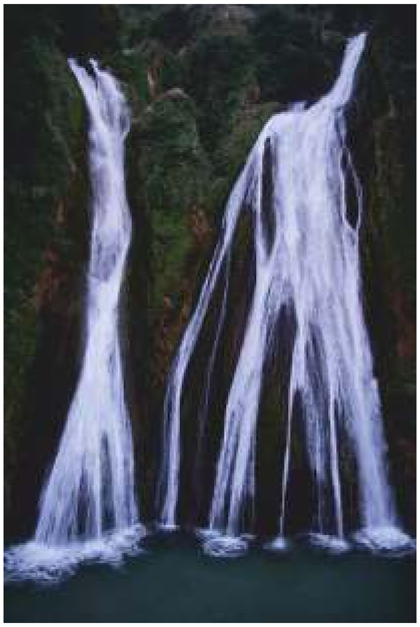

उत्तर : अधिक ऊँचाई के कारण जल–प्रपात की चोटी पर पानी में स्थितिज ऊर्जा होती है। जब यह पानी नीचे गिरता है तो इसकी स्थितिज ऊर्जा गतिज ऊर्जा में परिवर्तित हो जाती है। फलस्वरूप, जब यह पानी जमीन से टकराता है तो इसकी गतिज ऊर्जा का एक भाग ऊष्मीय ऊर्जा में बदल जाता है। इस प्रकार उत्पन्न ऊष्मीय ऊर्जा जल–प्रपात के तल के पास के पानी को थोड़ा–सा गर्म कर देती है।

प्रश्न : कुछ पदार्थ बिना ज्वाला के क्यों जलते हैं?

उत्तर : जो पदार्थ गर्म करने पर पहले वाष्पित होते हैं, जलने पर ज्वाला उत्पन्न करते हैं। जैसे– पेट्रोल, मिट्टी का तेल, मोम, गंधक आदि। दूसरे वे ठोस पदार्थ हैं जो गर्म करने पर वाष्पित नहीं होते हैं, बिना ज्वाला के ही जलते हैं। इनके उदाहरणों में प्रमुख है– कोयला।

प्रश्न : सीमेंट में जिप्सम क्यों मिलाया जाता है?

उत्तर : जिप्सम ($CaSO_4 . 2H_2O$) एक यौगिक है। सीमेंट में जिप्सम की मिलावट इसलिए की जाती है ताकि पानी मिलाने के बाद उसे अधिक समय लगे। वह एकदम सूखने न पाए और निर्माण कार्य भी सुगमता से सुचारु रूप में चले।

कविता : मदन शेखपुरी

बच्चे! मेरी ध्यान से सुन ले...

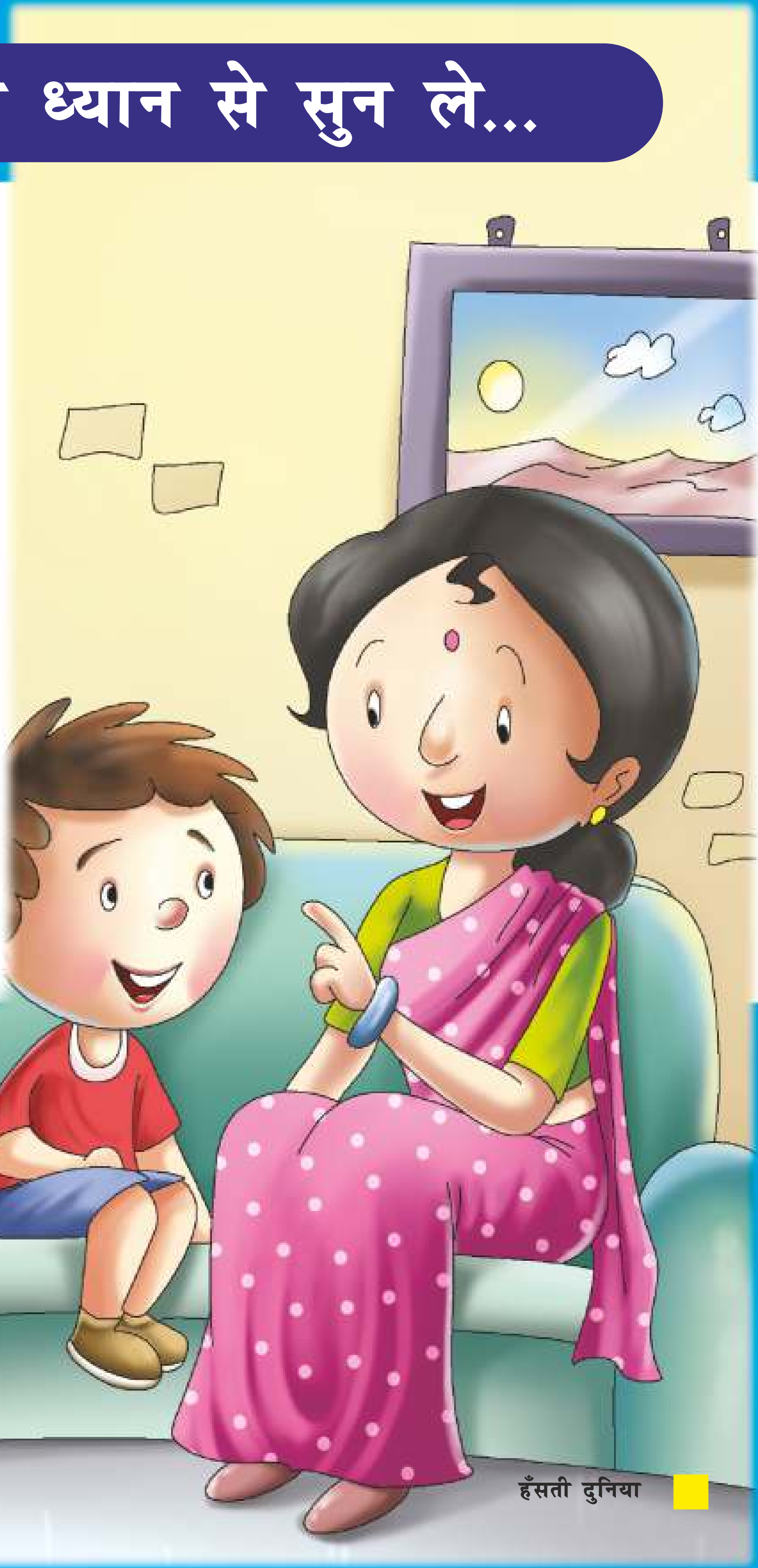

प्रेम–प्यार की जगी है जिसमें
जितनी–जितनी प्यास,
उसमें उतनी जगी है हिम्मत,
उतना ही विश्वास।

एक बूँद हिम्मत की काफ़ी,
तन–मन स्वस्थ बनाने को,
इन दोनों का खास महत्त्व है,
जीवन सही चलाने को।

बच्चे मेरी ध्यान से सुन ले...
यह छोटी–सी बात,
हिम्मत वाले को किसी ने जग में
देखा नहीं उदास।

जीत हमेशा उसकी उतनी–उतनी
बनी है दास,
प्रेम–प्यार की जगी है जिसमें
जितनी–जितनी प्यास।

कहानी : कमल सोगानी

वनराज का श्राप

पृथ्वी पर एक बार बहुत तेज सर्दी पड़ी। तमाम जानवर ठंड के मारे इधर–उधर गुफा में जाकर छिपने लगा। लेकिन सियार गुफा में न छिपे। वे तो बस सर्दी की स्याह रात्रि होते ही जोर–जोर से रोने–चिल्लाने लगते।

एक दिन इनके रोने–चिल्लाने से तंग आकर वनराज ने इसका कारण जानना चाहा तो भालू ने बताया– महाराज। शायद ये ठंड के मारे रोया करते हैं।

वनराज ने तुरन्त सुझाव दिया– आज रात को तुम जाकर सियारों की बस्ती में सूखी–सूखी लकड़ियों में आग लगा देना ताकि उनकी गर्मी से उन्हें ठंड न लगे।

रात्रि में भालू ने जाकर ऐसा ही किया, लेकिन सियारों के रोने की आवाज फिर भी सुनाई दी। सियारों के रोने–चिल्लाने से वनराज की नींद खुली तो उन्हें बड़ा क्रोध आया। मन में सोचा– जरूर भालू ने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया है। अतः तुरन्त भालू को अपने दरबार में बुलाया।

भालू जैसे ही आया तो वनराज ने पूछा– तुमने सियारों की बस्ती में आग क्यों नहीं लगाई, हमारी आज्ञा का पालन क्यों नहीं किया?

भालू बोला– महाराज। आपके हुक्म के मुताबिक सियारों की बस्ती में आठ–दस जगह आग के ढेर मैं खुद अपने हाथों से जलाकर आया था।

इस पर वनराज ने कहा– यदि तुमने वास्तव में वहाँ आग लगाई थी तो फिर

सियार क्यों रोते रहे रातभर, क्या वजह है इसकी?

सुबह वनराज ने सियारों के नेता को अपने दरबार में बुलाकर पूछा– आप लोग रात में इतनी जोर–जोर से क्यों चिल्लाते हैं?

इस पर सियारों का नेता बोला– महाराज। हम इन सर्दियों की रात्रि में रोते–चिल्लाते नहीं बल्कि यों ही मजाक–मजाक में रोने–चिल्लाने का नाटक किया करते हैं ताकि हमें सर्दी महसूस न हो।

इस पर वनराज ने कहा– लेकिन कल रात हमने तुम्हारी बस्ती में तुम्हें ठंड से बचाने के लिए कुछ आग के ढेर जलवाये थे। इसके बावजूद भी रात में क्यों रोये, क्या सर्दी अधिक थी?

अब सियारों के नेता ने कहा– महाराज! कल रात को तो हम बहुत जोर–जोर से इसलिए रोए थे कि हम प्राकृतिक ठंडी हवा न ले सके। हम पूरी रात सर्द हवा से वंचित रहे। हमें तो ठण्ड का मौसम बड़ा प्यारा लगता है। हमें ठंड नहीं लगती। आपने हमारी सर्द हवा को आग जलाकर गर्म करवा दिया। बस इसी कारण हमारा पूरा समाज जोर–जोर से रो रहा था।

सियार के नेता के मुख से ऐसी मूर्खतापूर्ण बात सुनकर वनराज को बड़ा क्रोध आया। वनराज को तो वनदेवी का वरदान प्राप्त था। अतः सियारों को श्राप देते हुए कहा– अब से तुम लोग हर सर्दियों में वास्तव में जोर–जोर से रोते–चिल्लाते रहोगे।

इस पर सियारों का नेता गिड़गिड़ा कर बोला– महाराज! ऐसा श्राप हमको मत दो। लेकिन वनराज ने एक न सुनी।

बस, तब से ही सर्दियों के मौसम में सियार रात्रि में बेमतलब ही जोर–जोर से रोते–चिल्लाते आ रहे हैं।

कुछ रोचक बातें :

जीवधारियों के सम्बन्ध में

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

भूमि पर सर्वाधिक धीमा चलने वाला जानवर : उष्णकटिबंधीय अमेरिका में तीन खुर वाला एक स्लॉथ है जो बहुत ही धीरे चलता है। यह पूरे एक घंटे में 11 से 16 कि.मी. तक ही चल पाता है।

दीर्घजीवी जीव : प्रामाणिक तौर पर तो यही कहा जाता है कि सबसे अधिक आयु कछुए की होती है। यह सुस्त रफ्तार प्राणी लगभग 150 वर्ष तक जीवित रहता है। इसके बाद नम्बर आता है ब्लू ह्वेल का। यह भी लगभग शतायु है। विशालकाय हाथी आमतौर पर 70 वर्ष तक जिन्दा रहता हो।

अधिक सोने वाले जीव : कुछ जीव होते हैं जो अपने जीवन काल का 80 प्रतिशत समय तक सोते या ऊंघते रहते हैं। इसमें आर्माडीलोस ओपोसमस और स्लॉथ है।

गर्भधारण की सबसे छोटी अवधि : अमेरिका में एक प्रकार का मादा चौपाया जिसे ओपोसम के नाम से जाना जाता है। केवल 12–13 दिन गर्भधारण करने के बाद ही अपने शिशु को जन्म दे देती है। कभी–कभी तो केवल 8 दिनों में ही जन्म दे देती है।

सबसे बड़ी गर्भधारण की अवधि : एशिया की हथिनी के गर्भधारण की न्यूनतम समय सीमा 609 दिन तथा अधिकतम 760 दिन की होती है।

संग्रहकर्ता : भूपिन्दर धवन (लुधियाना)

कभी न भूलो

- इन्सान को नफरत की बजाय प्रेम और हिंसा के मार्ग के बजाय शान्ति की राह पर चलना चाहिए।
- परमात्मा की जानकारी कर आत्मबोध करना ही इन्सान के जीवन का प्रमुख लक्ष्य है।
- सत्य से कमाया गया धन हर प्रकार से सुख देता है। छल व कपट से कमाया धन दुख ही दुख देता है।
- काश! संसार के सभी इन्सानों को मिलजुल कर रहने का सलीका प्राप्त हो जाये।
- स्वार्थ में अच्छाइयां ऐसे खो जाती हैं जैसे समुद्र में नदियां।
- संसार में घृणा से अधिक शक्तिशाली प्रेम और क्षमा ही है।

  – बाबा हरदेव सिंह जी
- सद्गुरु का दर सुखों का घर है, यहाँ से जो मांगोगे मिलेगा। कभी ये मांगो कि हमें केवल सद्गुरु चरणों का सहारा ही चाहिए।

  – बाबा गुरबचन सिंह जी
- मन की शान्ति के लिए शान्ति के स्रोत प्रभु से जुड़ना जरूरी है।

  – निरंकारी राजमाता जी
- जहाँ पर सच की आवाज बुलन्द है। वहाँ से झूठ रूपी अन्धेरा अपने–आप ही चला जाता है। – सन्त वरिन्दर सिंह जी
- समाज को बदलने वाले ही महापुरुष कहलाने के योग्य होते हैं।
- मनुष्य को हमेशा ही सच्चाई का साथ देना चाहिए। – रवीन्द्रनाथ टैगोर
- ज्ञान का उपयोग हमेशा ही समाज के हित में करना चाहिए।

  – स्वामी विवेकानन्द
- महान कार्य करने के लिए पहली जरूरी चीज है– आत्मविश्वास। – जानसन
- हर काम में विजय प्राप्त करने के लिए एकाग्रचित्त होना जरूरी है। – माले
- अगर शान्ति आपको अपने अन्दर से नहीं मिलती तो उसको बाहर से खोजना बेकार है। – रस्किन
- प्रार्थना (प्रभु–सुमिरण) आत्मा की पुकार है, इसे करो। – महात्मा गाँधी
- संसार ही महापुरुष को ढूंढ़ता है न कि महापुरुष संसार को। – कालीदास

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

मतलब?
ये देखो ताला, हम इस साइकिल को ताला लगा देते हैं।
चलो भागो। चाबी कहीं छुपा देते हैं और छिपकर देखते हैं कि साइकिल वाला क्या करता है?
अरे! ये तो मौली आ रही है साइकिल की तरफ। ओह! तो ये साइकिल मौली की है और उसने हमें बताया भी नहीं। अब हम भी उसे कुछ नहीं बताएँगे।

अरे! मेरी साइकिल को ताला? मैंने तो लगाया ही नहीं था। फिर किसने लगाया होगा? चाबी कहाँ रखी होगी?
भइया, क्या आप मेरे साथ चलेंगे? मुझे अपनी साइकिल की चाबी बनवानी है।
चलो, हम मौली के आने से पहले ही ताला खोलकर फिर से छिप जाते हैं।
ये देखिए भइया, इस साइकिल की चाबी बनवानी है मुझे। ये ताला खोल .... ना है! अरे ताला तो लगा ही नहीं हुआ!

अरे! बेटा, क्यों इतनी दूर से हमें खेंच लाई। यहाँ तो ताला ही नहीं है खामख़्वाह हमारा समय बरबाद कर दिया।
ऐसा कैसे हो सकता है? अभी तो ताला लगा हुआ था।
लगा था तो खुल भी गया। पर इसलिए कि तुम मेरी एक अच्छी सहेली हो! नहीं तो ये ताला तो चाबीवाला भइया ही खोलता खूब सारे पैसे लेकर। इसलिए अब उन पैसों से तुम हमें नई साइकिल की खुशी में पार्टी दोगी। समझीं!

आलेख : शिवचरण चौहान

मौलश्री : मोहक सुगन्ध बिखेरने वाला फूल

मौलश्री, अद्‌भुत सुगन्ध वाला फूल है। आदिकाल से मौलश्री के फूल सभी को प्रिय रहे हैं।

मौलश्री का एक नाम बकुल भी है। आम बोलचाल की भाषा में मौलश्री को मोलसिरी कहते हैं। मौलश्री का वृक्ष मध्यम आकार का होता है। तना सीधा शाखाओं वाला होता है।

शाखाएं हरे पत्तों से भरी रहती हैं। शाखाएं ऊपर की ओर उठी हुई होती हैं। इस कारण मौलश्री का सर गोलाकार हो जाता है। श्वेत मटमैले रंग के फूल, पत्तों के बीच में खिलते हैं। मटमैला सफेद रंग का पुष्प बहुत सुगन्ध देता है। एक फूल कई दिन तक बासी नहीं होता। लगता है, अभी–अभी तोड़कर लाया गया है। हरे–पत्ते सुन्दर नयनाभिराम, बगीचे की शान होते हैं। मौलश्री में फूल गुच्छों में आते हैं। बाग में एक ही मौलश्री का वृक्ष पूरे बाग को अपनी मोहक खुशबू से सरोबार कर देता है।

वर्षा ऋतु, शरद ऋतु में मौलश्री बहार पर रहता है। उत्तर प्रदेश में हरिद्वार में मौलश्री की महिमा, महत्ता देखते ही बनती है। संस्कृत कवियों ने अपनी रचनाओं में सबसे ज्यादा मौलश्री के फूलों के गुण गाए हैं। सौन्दर्य व पूजा के लिए मौलश्री का फूल प्रयोग किया जाता है। मोहकता, सुन्दरता का पर्याय मौलश्री स्वास्थ्य की दृष्टि से भी उपयोगी है।

मौलश्री वृक्ष के फूल, पत्तियां, छाल व लकड़ी सभी उपयोगी हैं। मौलश्री की छाल का काढ़ा, पुराना बुखार दूर करता है। मौलश्री का पका फल, पेट के रोगों के लिए लाभदायी है। फल अतिसार व पेचिश में आराम पहुँचाता है। अनेक दंतमंजनों में मौलश्री की छाल का प्रयोग किया जाता है। मौलश्री वृक्ष की पतली–टहनी दातुन के काम आती है। मौलश्री की दातुन रोज करने से दाँत मजबूत, स्वस्थ व सुन्दर हो जाते हैं तथा मुँह से खुशबू निकलती रहती है। सर्पविष दूर करने में मौलश्री के पत्तों का रस काम आता है। मौलश्री के फूलों का इत्र (तेल) दुनिया भर में लोकप्रिय है।

वैसे तो मौलश्री का वृक्ष पूरे भारत में पाया जाता है किन्तु दक्षिण भारत में मौलश्री के वृक्ष बहुतायत में पाए जाते हैं।

बोध कथा : राजेन्द्र परदेसी

तीन बातें

बहुत समय पहले रामनगर में एक सेठ रहता था। उसका नाम रामकृपाल था। सेठ रामकृपाल ने अपनी कार्यकुशलता और बुद्धिमानी से काफी धन अर्जित किया पर उसका लड़का बालकराम अपने पिता के व्यापार में बिल्कुल रुचि नहीं लेता था। जिसके कारण व्यापार के गूढ़ रहस्य को वह समझ नहीं पाया था। उसी से सेठ रामकृपाल बहुत चिंतित रहता था कि उसके मरने के बाद व्यापार का क्या होगा।

एक बार सेठ रामकृपाल बहुत बीमार हुआ तो उसने अनुभव किया कि अब उसका बचना मुश्किल है तो अपने बेटे बालकराम को पास बुलाकर कहा– बेटा! मैंने जो भी धन बटोरा है, वह सब तुम्हारा है, उसे संभाल कर रखोगे तो तुम हमेशा सुखी रहोगे।

पिता की बात सुनकर बालकराम बोला– इसके लिए मुझे क्या करना होगा?

सेठ रामकृपाल ने कहा– बेटा, मेरी तीन बातों को अगर तुम मानोगे तो तुम्हें व्यापार में कभी नुकसान नहीं होगा और तुम्हारा धन भी बढ़ता रहेगा।

–वे कौन–सी बातें हैं?– बालकराम ने पूछा।

सेठ रामकृपाल ने बताया– पहली बात यह है कि व्यापार के लिए हमेशा छाया में जाना और छाया में ही आना। दूसरी बात यह है कि हमेशा मीठा ही खाना। तीसरी बात और अंतिम सलाह यह है कि किसी को कुछ देकर मांगना नहीं। इतना कहकर सेठ रामकृपाल परलोक को सिधार गया।

जब पिता का क्रियाकर्म समाप्त हो गया तो एक दिन बालकराम ने अपने नौकर को बुलाकर आदेश दिया कि घर से दुकान तक का रास्ता टीन की चादरों से ढक दो जिससे छाया में आयें–जायें। नौकर ने बालकराम के आदेश का तुरन्त पालन किया और रास्ते को ढक दिया।

अब बालकराम उसी टीन की छांव में घर से दुकान तक आने–जाने लगा, वह खाने में महंगी से महंगी मिठाइयां लेता, व्यापार में जिन्हें सामान उधार देता, उनसे पैसे मांगने न जाता। इस कारण कुछ दिनों में ही उसकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गयी, अधिक मिठाईयां खाने से पेट भी गड़बड़ रहने लगा, स्वास्थ्य

ठीक न रहता, नौबत यह आयी कि पिता द्वारा अर्जित सारा धन बालकराम गंवा बैठा।

एक दिन बालकराम अपने घर के सामने उदास बैठा था, एक साधु उधर से निकला। साधु ने उसे उदास देखकर पूछा– तुम इतने उदास क्यों हो? बताओ, शायद मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूं।

साधु से सहानुभूति के शब्द सुनकर बालकराम बोला– मेरे पिता ने मरते समय मुझे तीन सलाह दी थीं। पहली सलाह थी कि छाया में जाना और छाया में ही आना, दूसरी सलाह थी कि हमेशा मीठा ही खाना और तीसरी तथा अंतिम सलाह थी कि किसी को कुछ देकर मांगना नहीं। मैंने उन्हीं की सलाह पर चलकर इस स्थिति में पहुँच गया हूँ कि आज मुझे और मेरे परिवार को खाने के लाले पड़े हुए हैं, पहनने के लिए वस्त्र भी नहीं हैं।

बालकराम की बातें सुनकर साधु जोर से हँसा और बोला– मूर्ख! तूने अपने पिता की बातों का बहुत अच्छा अर्थ लगाया।

साधु का यह व्यंग्य बालकराम को अच्छा नहीं लगा। उसने मन में सोचा कि यह कैसा साधु है जो दूसरों की पीड़ा कम करने का उपाय बताने के बजाय उसका मजाक उड़ा रहा है। फिर भी स्वयं पर नियंत्रण रखकर पूछा– मेरे पिता की बातों का और क्या अर्थ था?

साधु बोला– मूर्ख! तुम्हारे पिता ने छाया में चलने की सलाह दी थी। इसका अर्थ है कि अपनी दुकान पर सुबह ही चले जाना और शाम होने पर ही वापस आना। हमेशा मीठा ही खाने का अर्थ है कि सदा संतोषरूपी मीठा फल ही खाना, किसी को देकर मांगने न जाने का अर्थ है कि व्यापार में किसी को उधार भी देना तो उसके बदले उसकी कोई चीज गिरवी जरूर रख लेना, जिससे तुम्हें पैसा वापस मांगने नहीं जाना पड़े। बल्कि उधार लेने वाला स्वयं ही अपनी चीज छुड़ाने के लिए तुम्हारे पास आये। इतना कह साधु बोला– अगर तुम अपने पिता की बातों का सही अर्थ लगाते तो तुम्हें कभी भी यह दिन देखने न पड़ते।

अब बालकराम अपने पिता की बातों का गूढ़ रहस्य जान गया था। वह उसी पर पुनः चलने लगा। कुछ ही दिनों में उसके व्यापार में दिन दूना रात चौगुना लाभ होने लगा, वह अपने पिता की तरह फिर से धनवान सेठ बन गया।

लोक कथा : डॉ. रश्मि शील

चतुर किसान और घमण्डी जागीरदार

कभी किसी जमाने में कहीं एक जागीरदार रहता था। बड़ा ही अमीर और बड़ा ही घमण्डी। कुछ इने–गिने लोगों से ही वह कोई वास्ता रखता था। जहाँ तक किसानों का सवाल था, उन्हें तो बिल्कुल ही खातिर में न लाता, उनसे उसे मिट्टी की बू जो आती थी। उसने अपने नौकरों को हुक्म दे रखा था कि अगर वे लोग नजदीक आने की हिमाकत करें, तो उन्हें दूर भगा दिया जाए।

एक दिन दो किसान इकट्ठे होकर जागीरदार के बारे में चर्चा करने लगे। एक ने कहा, "मैंने जागीरदार साहब को बहुत नजदीक से देखा है, खेत में मेरी उनसे मुलाकात हुई थी।"

"मैंने कल बाड़ के ऊपर से झांका तो जागीरदार साहब को बरामदे में कॉफी पीते पाया।" दूसरा किसान बोला।

तभी एक किसान उनके पास आया जो चतुर और बुद्धिमान था। उनकी बातें सुनकर वह हँसने लगा। बोला, "यह भी कौन–सी बड़ी बात है। बाड़ के ऊपर से तो कोई भी जागीरदार को देख सकता है। मैं अगर चाहूं तो उसके साथ खाना खा सकता हूँ।

"अरे हटाओ भी।" दोनों किसान बोले। "जैसे ही वह तुम्हें देखेगा, वैसे ही कान पकड़कर बाहर निकालने का हुक्म दे देगा। वह तो तुम्हें घर के पास भी नहीं फटकने देगा।"

पहले दोनों किसान इस तीसरे किसान की खिल्ली उड़ाने और उस पर फब्तियां कसने लगे।

"यों ही डींग हांकते हो!" वे बोले।

"नहीं, ऐसा कुछ नहीं है!"

"अच्छा, अगर ऐसी बात है तो हो जाये शर्त। अगर तुम जागीरदार साहब के साथ

खाना खा लोगे तो तुम्हें गेहूं की तीन बोरियां और बैलों की एक जोड़ी देंगे। अगर तुम ऐसा नहीं कर पाओगे, तो तुम्हें हमारा कहा करना होगा।''

''मंजूर है।''

वह किसान जागीरदार के अहाते में पहुँचा। जागीरदार के नौकर–चाकरों ने जैसे ही उसे देखा वे भागकर घर से बाहर आए और लगे उसे वहाँ से खदेड़ने।

''जरा रूको,'' किसान बोला। ''मैं जागीरदार साहब के लिए एक खुशखबरी लेकर आया हूँ।''

''क्या खुशखबरी लाए हो?''

''और किसी को नहीं, केवल जागीरदार साहब को बताऊंगा।''

चुनांचे जागीरदार साहब के नौकर अपने मालिक के पास गये और जो कुछ किसान ने कहा था, वह कह सुनाया। जागीरदार को जिज्ञासा हुई क्योंकि किसान कुछ मांगने नहीं, बल्कि देने आया था। हो सकता है कि वह कोई बड़े काम की बात बताना चाहते हो। ''उसे अन्दर ले आओ।'' उसने नौकरों से कहा।

नौकरों ने किसान को अन्दर भेज दिया। जागीरदार ने अपने कमरे से बाहर आकर उससे पूछा, ''क्या खबर लाये हो?''

किसान ने नौकरों की ओर देखा। ''हुजूर, मैं आप से एकान्त में बात करना चाहता हूँ।''

अब जागीरदार की जिज्ञासा चरम बिन्दु पर जा पहुँची। उसने सोचा जाने क्या कहना चाहता है किसान? उसने नौकरों से जाने को कहा। जैसे ही वे अकेले रह गये वैसे ही किसान ने धीरे से पूछा, ''श्रीमान जी, मुझे यह बताने की कृपा करें कि घोड़े के सिर के बराबर सोने के डले की क्या कीमत होगी?''

''तुम यह किसलिए जानना चाहते हो?'' जागीरदार ने पूछा।

''इसका भी कारण है।''

जागीरदार की आंखें चमक उठीं और उत्तेजना से उसके हाथ कांपने लगे। ''यों ही तो यह मुझ से ऐसा प्रश्न नहीं पूछ रहा,'' उसने मन ही मन सोचा। ''जरूर कहीं कोई खजाना उसके हाथ लग गया हैं।'' जागीरदार ने किसान से बात निकलवाने की कोशिश की। ''भलेमानस, जरा यह तो बताओ कि तुम किसलिए यह जानना चाहते हो?'' उसने फिर पूछा।

किसान ने आह भर कर कहा, ''अगर आप नहीं बताना चाहते, तो न सही। अच्छा तो मैं अब चलता हूँ, जाकर दोपहर का भोजन करना है।''

जागीरदार अब अपना घमंड भूल गया। वह लालच से बुरी तरह कांपने लगा। ''मैं इस किसान को उल्लू बनाकर इससे सोना निकलवा लूँगा,'' उसने मन ही मन सोचा। फिर वह किसान से बोला, ''सुनो तो भलेमानस, तुम्हें घर जाने की ऐसी क्या जल्दी है? अगर तुम्हें भूख लगी है तो तुम यहीं मेरे साथ खाना खा सकते हो।'' इतना कहकर उसने अपने नौकरों को आवाज दी, ''ऐ नौकरों, जल्दी से खाना लगाओ।''

नौकरों ने झटपट मेज लगा दी। खाने की बहुत–सी चीजें लाकर रख दीं। जागीरदार किसान की ओर कभी एक और कभी दूसरी चीज बढ़ाता हुआ कहने लगा, ''भलेमानस, खूब खाओ–पिओ। जरा भी तकल्लुफ न करो।''

किसान खाता रहा। जागीरदार उसकी थाली में खाने की चीजें रखता जाता था।

किसान ने जब खूब पेट भरकर खा लिया तो जागीरदार ने कहा, ''अच्छा, अब तुम जाओ और घोड़े के सिर के बराबर सोने का डला ले आओ। तुम्हारी बनिस्बत वह मेरे कहीं ज्यादा अच्छी तरह काम आएगा। तुम्हें बहुत सारा इनाम दूंगा।''

''नहीं श्रीमान जी, मैं वह सोने का डला नहीं ला सकता।''

''वह क्यों?''

''क्योंकि वह तो मेरे पास है ही नहीं।''

''है ही नहीं! तो तुम उसकी कीमत क्यों पूछ रहे थे?''

''बस, जिज्ञासावश!''

जागीरदार अब आगबबूला हो उठा। उसका चेहरा गुस्से से तमतमा उठा और वह पैर पटकने लगा। ''निकल यहाँ से उल्लू कहीं के!'' वह चिल्लाया।

किसान ने जवाब दिया, ''श्रीमान जी, मैं ऐसा उल्लू नहीं हूँ जैसा आप समझते हैं। आपके यहाँ मैंने बढ़िया दावत का मजा लिया है और शर्त में गेहू की तीनों बोरियां और गोल सींगोंवाले बैलों की एक जोड़ी जीती है। ऐसा करना किसी उल्लू के बस की बात नहीं!'' इतना कहकर वह चलता बना।

पढ़ो और हँसो

लड़की की माँ : मेरी बेटी बहुत ऊँचा गाना गाती है।

लड़के की माँ : फिर तो इन दोनों की जोड़ी खूब जमेगी क्योंकि मेरा बेटा भी बहुत ऊँचा सुनता है।

♣ ♣ ♣

एक चोर रात में बांकेलाल के घर में घुस गया और उसकी कनपटी पर पिस्तौल रखकर बोला– बताओ, सोना कहाँ है?

बांकेलाल बोला– भाई, आज घर में अकेला ही हूँ। सारा घर खाली है जहाँ मर्जी हो वहाँ सो जाओ।

♣ ♣ ♣

एक यात्री : (दूसरे यात्री से) भाई साहब! ट्रेन समय पर तो आ रही है न?

दूसरा यात्री : जी नहीं, बिल्कुल नहीं। ट्रेन पटरी पर आ रही है।

♣ ♣ ♣

शिक्षक : (सोनू से) गाय पर तुमने जो निबन्ध लिखा है। वह तुम्हारे भाई के निबन्ध जैसा है। क्या तुमने नकल की है?

सोनू : नहीं सर! दरअसल हमारे एक ही गाय है।

– मीनाक्षी आनन्द (कानपुर)

एक कंजूस अपने बच्चों से बोला– बच्चों! जो कोई रात को खाना नहीं खाएगा मैं उसे दस रुपये दूँगा।

सभी बच्चे मान गये और दस रुपये लेकर सो गये।

अगले दिन वह कंजूस अपने बच्चों से बोला– खाना उसे ही मिलेगा जो दस रुपये वापस देगा।

♣ ♣ ♣

पति घर लौटा तो वह अपने साथ एक कुत्ते का पिल्ला व खरगोश साथ ले आया। पत्नी ने यह सब देखकर पूछा– अरे! यह सब कहाँ रहेंगे?

– वहीं रहेंगे, जहाँ हम लोग रहते हैं।

– पति बोला।

– ये खाएंगे क्या?– पत्नी ने पूछा।

– जो हम लोग खाते हैं।

– और इनकी बदबू का क्या होगा?

– ये भी हमारी तरह अभ्यस्त हो जाएंगे।

♣ ♣ ♣

गिद्देराम : मेरा परीक्षा का सफर ऐसा चला कि 18–18 घण्टे तक पढ़ा।

धोलू : तो फिर फेल कैसे हो गया?

गिद्देराम : किसी ने बताया ही नहीं कि 'सलेब्स' बदल गया है।

– पलक सोनी (सिवनी)

बंटी : (ज्योतिषी से) मेरा हाथ देखकर भविष्य बताइए।

ज्योतिषी : तुम्हारे दो जन्म होंगे।

बंटी : अच्छा लो दस रुपया।

ज्योतिषी : दस रुपया और दो।

बंटी : दस रुपया अगले जन्म में दूँगा।

♣ ♣ ♣

दीपक : अरे भई तुमने तालाब में डूबते बच्चे को बचाया और फिर बाहर निकालकर उसे मारा क्यों?

टिंकू : जब वहाँ सामने लिखा था कि तैरना मना है तो फिर वह तैरने क्यों गया?

♣ ♣ ♣

अध्यापक : (छात्र से) राकेश, मेरा ख्याल है कि तुम मेरी कक्षा में बातें कर रहे थे।

राकेश : सर! आपका ख्याल गलत है।

अध्यापक : क्यों?

राकेश : क्योंकि सर! मैं कभी सोते हुए बातें नहीं करता हूँ।

– राकेश वलेचा (गोंदिया)

♣ ♣ ♣

दिनेश : (भरत से) क्यों रो रहे हो?

भरत : हाथी मर गया है।

दिनेश : क्या यह तुम्हारा पालतू हाथी था?

भरत : नहीं।

दिनेश : तो फिर तुम क्यों रो रहे हो?

भरत : मुझे उसकी कब्र खोदने का काम मिला है।

♣ ♣ ♣

ज्योति : तुम्हें यह छोटा मैडल किसलिए मिला है?

कमल : गाना गाने के लिए।

ज्योति : और यह बड़ा?

कमल : गाना बंद करने के लिए।

– जगतार 'चमन' (अनूपगढ़)

डॉक्टर : (मरीज से) ये दवा तीन चम्मच खाते रहना।

मरीज : पर डॉक्टर साहब मेरे पास तो एक ही चम्मच है।

♣ ♣ ♣

टीचर : होमवर्क इतना गंदा क्यों है मोना?

मोना : मैडम, मेरी मम्मी की लिखाई ही ऐसी है।

♣ ♣ ♣

पंडित जी हवन कराते समय एक चम्मच घी आग में और एक चम्मच घी अपनी शीशी में डालते जा रहे थे। पास बैठा एक बच्चा चिल्लाकर बोला– घृतम् चोरम्, घृतम् चोरम्।

पंडित जी बच्चे को चुप कराते हुए बोले– पुत्र, ना कर शोरम्, ना कर शोरम्, आधा तोरम् आधा मोरम्।

♣ ♣ ♣

मकान मालिक : तुम्हारी ओर पिछले छह महीने का किराया बकाया है और तुम केवल सौ रुपये दे रहे हो?

किरायेदार : अगर पिछले दरवाजे की चौखट तोड़कर न बेचता तो ये भी न मिलते।

♣ ♣ ♣

निष्ठा : (मेहमान से) जब मैं दो साल की थी तो छत से गिर गई थी।

मेहमान : फिर क्या तुम बच गई थी?

निष्ठा : पता नहीं, उस समय मैं बहुत छोटी थी।

♣ ♣ ♣

बब्बू : बचपन में माँ की बात सुनी होती तो आज ये दिन न देखने पड़ते।

कृष्णा : क्या कहती थी माँ?

बब्बू : जब बात सुनी नहीं तो मुझे क्या पता, क्या कहती थी।

– भारत भूषण शुक्ल (गाजियाबाद)

जन्म दिन मुबारक

कनिका (दिल्ली)

वेदान्ती (चन्द्रपुर)

गुरजश्न (डकाला)

अलाया (पटियाला)

रुद्रांश (आशापुर)

दीया (कारवार)

तानुश (खिजराबाद)

हार्दिक (फतेहाबाद)

आर्व (दिल्ली कैंट)

निर्लेप (भायंदर)

अनय (सिवनी)

समृद्ध (राजकोट)

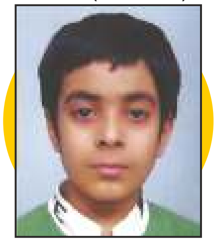
हार्दिक (दिल्ली)

धैर्य (देहरादून)

धीर (अहमदाबाद)

परिस (कांदिवली)

गैवी सिंह (कोकड़ी)

गोल्डी (पाचोरा)

तनिश (मुंबई)

मनन (दिल्ली)

समदृष्टि (कठुआ)

अनुभव (बर्नपुर)

श्रेय (गाँधी नगर)

केशवकुमार (बरनाला)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्पलेक्स,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपनं चिपकाना अनिवार्य है।

नाम...जन्म माह...............वर्ष..........................

पता ....

....

आपके पत्र मिले

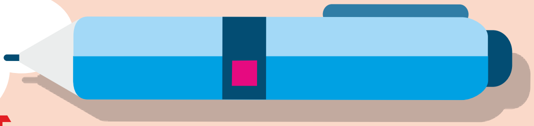

आस

बुद्धि और खेल का,
साथ-साथ विकास है।
आने वाले कल से,
देश को बड़ी आस है॥

– डॉ. नरेन्द्र नाथ लाहा
(ललितपुर कालोनी, ग्वालियर)

मासिक बाल पत्रिका 'हँसती दुनिया' का फरवरी अंक यथासमय मिला। इस अंक में ज्ञानोपयोगी रचानाओं ने मंत्र–मुग्ध कर दिया।

कहानियों में 'सुन्दरवन में बसन्त उत्सव' एवं 'सात मोतियों का चमत्कार' मनोरंजन से भरपूर एवं शिक्षाप्रद लगीं।

कविता 'मानव और विज्ञान' जानकारी भरपूर एवं शिक्षाप्रद थीं।

स्तम्भ तो सारे ही शिक्षाप्रद एवं ज्ञानवर्द्धक होते हैं। कुल मिलाकर सम्पूर्ण अंक ही प्रशंसनीय है।

'क्या आप जानते हैं' ने विशेष रूप से प्रभावित किया। चित्रकथाएं भी लाजवाब हैं।

हमारे घर के नन्हें–मुन्हें बाल–गोपालों को 'हँसती दुनिया' बहुत पसन्द आती है और वे पत्रिका आते ही छीना–झपटी करने लगते हैं। सच, यह पत्रिका बालकों को संस्कारवान, ज्ञानी और आदर्श चरित्रवान बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

– मोहम्मद मुमताज़ हसन (रिकाबगंज, गया)

मैं हँसती दुनिया का पुराना सदस्य हूँ और मेरा परिवार बेसब्री से इसका इन्तजार करता है।

जनवरी अंक मिला। इसमें प्रकाशित सभी कहानियां एवं कविताएं अच्छी लगीं।

लेख और 'प्रेरक–प्रसंग' ज्ञानवर्द्धक थे।

– वैभव किशोर (डांगौली बांगर)

वर्ग पहेली के उत्तर

1 जा	2 मा	■	3 है	द	4 र
■	री	■	द	■	सा
5 द	श	ह	रा	■	य
■	स	■	6 बा	7 व	न
8 सु	■	9 आ	द	र	■
10 भ	ती	जा	■	11 दा	दी
द्रा	■	12 द	र्श	न	■

मार्च अंक का रंग भरो परिणाम

प्रथम :

अंकित कुमार

आयु 13 वर्ष
गाँव : एक्कड कलां
पोस्ट : अम्बूवाला
जिला : हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

द्वितीय :

स्तुति घई

आयु 15 वर्ष
2084/5 पहली मंजिल, चूना मंडी,
पहाड़गंज (नई दिल्ली)

तृतीय :

तनिष्क गोयानी

आयु 12 वर्ष
नानकराम पापड़वाला, गली नं. 3,
सिन्धी कालोनी, खण्डवा (म.प्र.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

शिवानी भण्डारी (आमपाटा, टिहरी गढ़वाल), खुशी (अमरापुरी, रुद्रप्रयाग), संतुष्ट नंदा (लक्ष्मी किरयाना स्टोर, सूरतगढ़), श्रेष्ठता रैकुनी (गुरुदेव भवन, अल्मोड़ा), कसक गेलानी, ऋद्धि चंचलानी (टैगोर कालोनी, खण्डवा), पुनीत कुमार निरंकारी (नौशहरा), केतन रावत (वार्ड नं. 6, गौचर), हितेष कोटला (निम्बूचौड़), दीक्षान्त सैनी (बालचन्द पाड़ा, बूंदी), हिमांशू (शिवाजी नगर, गुड़गांव), पलक वर्मा (सेक्टर–52, चण्डीगढ़), कुन्दन प्रजापति (जगाधरी), दीक्षा पोपलानी (सिन्धी कालोनी, खण्डवा), सुदीक्षा राठौर (कवईया), एकता प्रसाद (तलावड़ी सर्कल, अहमदाबाद), विकास टाक (धुंधरी), समृद्ध प्रसाद, तेजस प्रसाद (तुगलकाबाद एक्स, दिल्ली), अद्वितीय मेहरा (सुन्दर नगर, अजमेर), आयान राव (बल्लूवाड़ा, रेवाड़ी), सलोनी गोयानी (सिन्धी कालोनी, खण्डवा)।

मई अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर **20 मई** तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 को भेज दें।

तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय) के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **जुलाई अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

इसमें 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम .... आयु ....

पुत्र/पुत्री ....

पूरा पता ....

....

....पिन कोड ....

रास्ता बताइए

भूखे चैनाराम को लड्डुओं के पास पहुँचाने का रास्ता बताइए।

* चाँद मोहम्मद घोसी

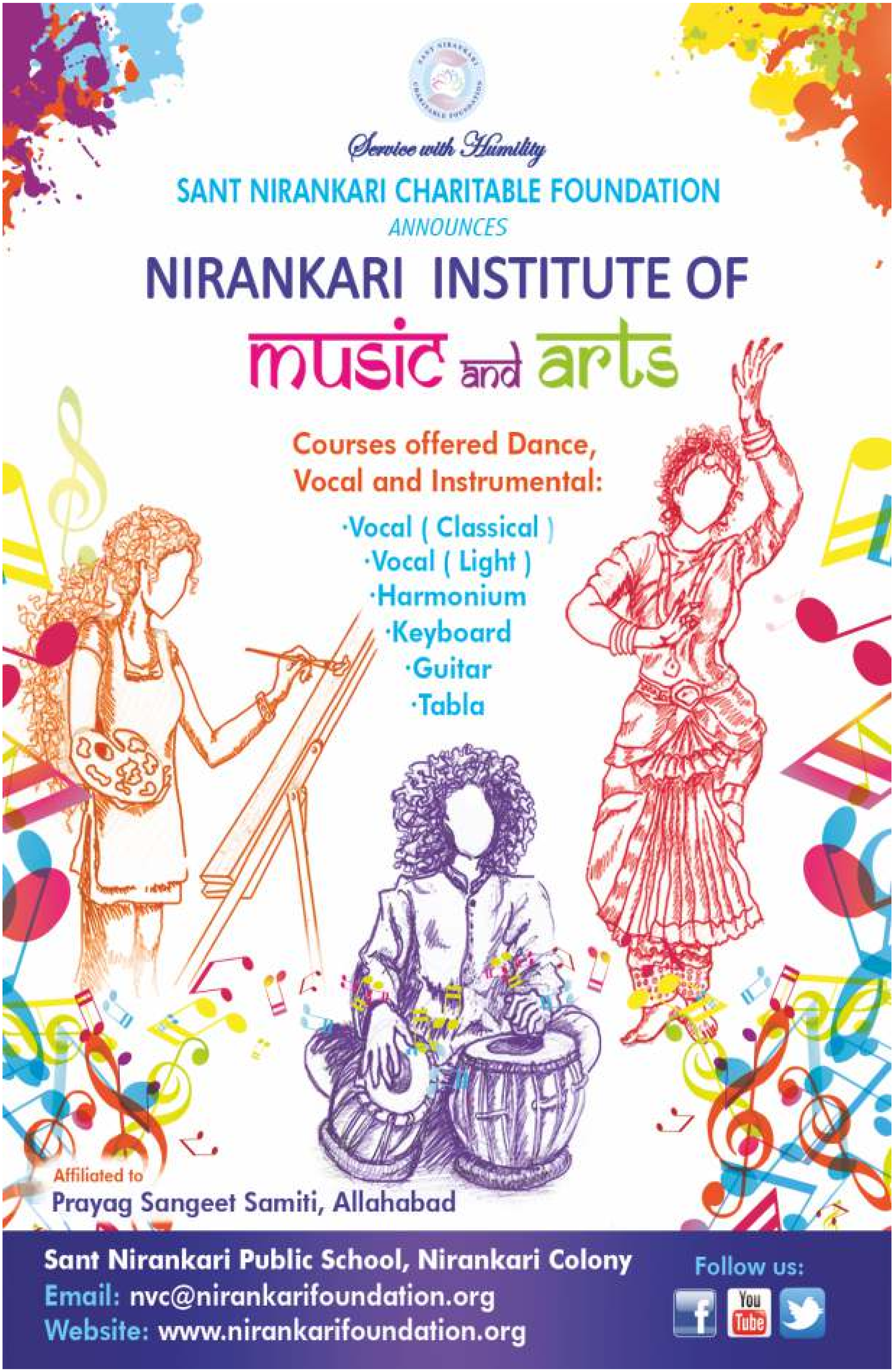
Service with Humility
SANT NIRANKARI CHARITABLE FOUNDATION
ANNOUNCES
NIRANKARI INSTITUTE OF
music and arts
Courses offered Dance, Vocal and Instrumental:
·Vocal (Classical)
·Vocal (Light)
·Harmonium
·Keyboard
·Guitar
·Tabla
Affiliated to
Prayag Sangeet Samiti, Allahabad
Sant Nirankari Public School, Nirankari Colony
Email: nvc@nirankarifoundation.org
Website: www.nirankarifoundation.org
Follow us:

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
: Licence No. U (DN)-23/2015-17
: Licenced to post without Pre-payment

Posted at IMBC/1 Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)